तत्त्वार्थसूत्रम्

Tattvārthasūtram

तृतीयोऽध्यायः

Third Chapter

तत्त्वार्थसूत्र
तृतीय अध्याय

अधोलोक व मध्यलोक का चित्राङ्कन इस चित्र में किया गया है।

अधोलोक के चित्र में निचले भाग के मध्य में सात पृथ्वियों को सात लाइनों में दिखाया है। चार में आग की लपटों से उष्णता व तीन में बर्फ की शिला से शीतता को बताया है। नारकी जीवों को जातिगत वैमनस्य, दुःखों, विभिन्न हथियारों के साथ अंकित किया है। शरीर को पारे के समान दिखाया है।

मध्यलोक – चित्र के ऊपरी भाग में मध्यलोक को दिखाया है। पाँचों मेरुओं के बीच में सुमेरु पर्वत व जम्बूद्वीपादि समूह (अढ़ाई द्वीप) एवं पाँचों मेरुओं के नीचे भरत तथा विदेह क्षेत्र आदि को प्रतीकात्मकरूप में दर्शाया है।

ऐरावत हाथी पर बैठे इन्द्र व बाल्य रूप में तीर्थङ्कर के जीव को अभिषेक के लिए ले जाते दिखाया है। देव लोगों को क्षीरसागर का जल ले जाते अङ्कित किया है।

तत्त्वार्थसूत्रम्
Tattvārthasūtram

तृतीयोऽध्यायः
Third Chapter

अधोलोक में पृथिवी आदि की अवस्थिति
Existence of Earths etc. in Lower World

रत्नशर्कराबालुकापङ्कधूमतमोमहातमःप्रभा भूमयो
घनाम्बुवाताकाशप्रतिष्ठाः सप्ताधोऽधः ।।१।।

(रत्न-शर्करा-वालुका-पङ्क-धूम-तमः-महातमः-प्रभाः भूमयः
घन-अम्बु-वात-आकाश-प्रतिष्ठाः सप्त-अधः-अधः।)

Ratnaśarkarāvālukāpaṅkadhūmatamomahātamaḥprabhā
Bhūmayo Ghanāmbuvātākāśapratiṣṭhāḥ Saptādho(a)dhaḥ. (1)

शब्दार्थ : **रत्नशर्कराबालुकापङ्कधूमतमोमहातमःप्रभाः –** रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, वालुकाप्रभा, पङ्कप्रभा, धूमप्रभा, तमःप्रभा और महातमःप्रभा; **भूमयः –** (ये) भूमियाँ; **घनाम्बुवाताकाशप्रतिष्ठाः –** घनाम्बु–वात–आकाश – घनाम्बुवलय, घनवलय, तनुवातवलय और आकाश (के आधार से) प्रतिष्ठित (हैं); **सप्ताधोऽधः –** (ये) सात नीचे–नीचे (भूमियाँ स्थित हैं)।

Meaning of Words : **Ratnaśarkarāvālukāpaṅkadhūmatamomahātamaḥprabhāḥ -** Ratnaprabhā, Śarkarāprabhā, Valukāprabhā, Paṅkaprabhā, Dhūmaprabhā, Tamaḥprabhā and Mahātamaḥprabhā; **Bhūmayaḥ -** (these) earths; **Ghanāmbuvātākāśapratiṣṭhāḥ-** atmosphere, dense water humid atmosphare, thin air atmosphere and space exist; **Saptādho(a)dhaḥ -** seven (exist) down below one after the other.

सूत्रार्थ : रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, वालुकाप्रभा, पङ्कप्रभा, धूमप्रभा, तमःप्रभा और महातमःप्रभा – ये सात भूमियाँ हैं, जो क्रमशः नीचे–नीचे घनाम्बु (घनोदधि) वलय, घनवातवलय, तनुवातवलय और आकाश के आधार से अवस्थित हैं।

English Rendering : There are seven levels of earth namely Ratnaprabhā (in luster like jewels), Śarkarāprabhā (in luster like pebbles),

Vālukāprabhā (in luster like sand) Paṅkaprabhā (in luster like mire or mud), Dhūmaprabhā (in luster like smoke), Tamaḥprabhā (in luster like darkness) and Mahātamaḥprabhā (in luster like pitch darkness) each of them existing one below the other supported by dense water atmosphere which in turn is supported by layer of dense air atmosphere, which is supported by layer of thin air atmosphere. This thin air layer is enveloped by space.

टीका : इस सूत्र में अधोलोक की सात पृथिवियों का वर्णन किया गया है (देखें, पृष्ठ १६८ पर चित्र)। इन पृथिवियों के नाम उनकी प्रभा अर्थात् आभा के अनुरूप कहे गये हैं। इन सात पृथिवियों के आगम में सात अन्य रौढ़िक नाम भी हैं, जो क्रमशः इस प्रकार हैं – घम्मा या घर्मा, वंशा, मेघा (शैलाशिला), अञ्जना, अरिष्टा, मघवी और माघवी।

प्रथम रत्नप्रभा पृथिवी एक लाख अस्सी हजार योजन मोटी है। इसके तीन भाग हैं – खरभाग (सोलह हजार योजन मोटा), पङ्कभाग (चौरासी हजार योजन मोटा) और अब्बहुल भाग (अस्सी हजार योजन मोटा)।

पहले खर भाग में नौ प्रकार के भवनवासी देवों (नागकुमार, विद्युत्कुमार, सुपर्णकुमार, अग्निकुमार, वातकुमार, स्तनितकुमार, उदधिकुमार, द्वीपकुमार और दिक्कुमार) के निवास-स्थान हैं और सात प्रकार के व्यन्तर देवों (किन्नर, किम्पुरुष, महोरग, गन्धर्व, यक्ष, भूत और पिशाच) के निवास-स्थान हैं।

दूसरे पङ्कभाग में असुरकुमारों (भवनवासी देवों) और राक्षसों (व्यन्तर देवों) के निवास-स्थान हैं।

तीसरे अब्बहुलभाग – 'घम्मा' या 'घर्मा' नामक पृथिवी में नारकी निवास करते हैं।

Comments : In this Sūtra, description of the seven layers of earth of the lower world i.e. hell is given (See Map in Page 168). The names of these earths are in accordance with their luster. These earths are also termed by seven other names which are Ghammā or Gharmā, Vaṁśā, Meghā (Śailā Śilā), Añjanā, Ariṣṭā, Maghavī and Māghavī.

The thickness of the first earth Ratnaprabhā is one Lākha eighty thousand Yojana. It is having three parts - Kharabhāga (thickness sixteen thousand Yojana), Paṅkabhāga (thickness eighty four thousand Yojana) and Abbahulabhāga (thickness eighty thousand Yojana).

In the first part known as 'Kharabhāga' nine categories of residential (Bhavanavāsī) celestial beings (Nāgakumāra, Vidyutkumāra, Suparṇakumāra, Agnikumāra, Vātakumāra, Stanitakumāra, Udadhikumāra, Dvīpakumāra and Dikkumāra) reside and seven categori of peripatetic (Vyantara) celestial beings (Kinnara, Kimpuruṣā Mahoraga, Gandharva, Yakṣa, Bhūta and Piśāca) reside.

In the second part - Paṅkabhāga, Asurakumāra (residential) and Rākṣasa (peripatetic) celestial beings reside.

In the third part - Ghammā or Gharmā earth, hellish beings reside.

नरकों की सङ्ख्या
Number of Hells

तासु त्रिंशत्पञ्चविंशतिपञ्चदशदशत्रिपञ्चोनैक–
नरकशतसहस्राणि पञ्च चैव यथाक्रमम् ।।२।।

(तासु त्रिंशत्-पञ्चविंशति-पञ्चदश-दश-त्रि-पञ्च-ऊन-एक-
नरक-शत-सहस्राणि पञ्च च-एव यथाक्रमम्।)

Tāsu Triṁśatpañcaviṁśatipañcadaśadaśatripañconaika-narakaśatasahasrāṇi Pañca Caiva Yathākramam. (2)

शब्दार्थ : **तासु –** उनमें (सात भूमियों में); **त्रिंशत्पञ्चविंशतिपञ्चदश–दशत्रिपञ्चोनैक –** तीस, पच्चीस, पन्द्रह, दश, तीन, पाँच कम एक (लाख); **नरक –** नरक; **शतसहस्राणि –** लाख; **पञ्च चैव –** और पाँच (नरक) ही; **यथाक्रमम् –** यथाक्रम से।

Meaning of Words : **Tāsu -** in these (seven earths); **Triṁśatpañcaviṁśatipañcadaśadaśatripañconaika -** thirty, twenty-five, fifteen, ten, three, five less one (Lākha); **Naraka -** hells; **Śatasahasrāṇi -** Lākha; **Pañca Caiva -** only five; **Yathākramam -** respectively or in that order.

सूत्रार्थ : उन रत्नप्रभा आदि सातों भूमियों में क्रमशः तीस लाख, पच्चीस लाख, पन्द्रह लाख, दश लाख, तीन लाख, पाँच कम एक लाख एवं पाँच ही नरक यानी बिल हैं।

English Rendering : In these seven layers of earth of hell e.g. Ratnaprabhā etc., there exist thirty Lākha, twenty-five Lākha, fifteen Lākha, ten Lākha, three Lākha, five less one Lākha and five infernal abodes (holes) respectively.

टीका : इस सूत्र में सातों पृथिवियों में नारकियों के नरकों – बिलों (रहने के स्थान) के प्रमाण बताये गये हैं। रत्नप्रभा पृथिवी में तीस लाख बिल, शर्कराप्रभा पृथिवी में पच्चीस लाख बिल, वालुकाप्रभा पृथिवी में पन्द्रह लाख बिल, पङ्कप्रभा पृथिवी में दश लाख बिल, धूमप्रभा पृथिवी में तीन लाख बिल, तमःप्रभा पृथिवी में पाँच कम एक लाख बिल और महातमःप्रभा पृथिवी में पाँच ही बिल होते हैं। इस प्रकार सातों पृथिवियों में कुल चौरासी लाख नरक यानी बिल हैं।

ये बिल तीन प्रकार के होते हैं – इन्द्रक, श्रेणीबद्ध और पुष्प–प्रकीर्णक। प्रत्येक पटल के ठीक मध्य में जो बिल हैं, वे 'इन्द्रक बिल' हैं। इन्द्रक बिल के चारों दिशाओं और विदिशाओं में जो पङ्क्तिबद्ध बिल हैं, वे 'श्रेणीबद्ध बिल' कहलाते हैं। दिशा–विदिशाओं के आठ अन्तरालों में इन्द्रक और श्रेणीबद्ध बिलों के सम्बन्ध से रहित बिना क्रम के जो पुष्प के समान बिखरे हुए बिल हैं, वे प्रकीर्णक (पुष्प–प्रकीर्णक) कहलाते हैं।

Comments : In this Sūtra description of the abodes of hellish beings i.e. hells or Bilas is given. There exist thirty lākha holes (Bilas) in the first Ratnaprabhā earth; twenty-five lākha in Śarkarā earth; fifteen lākha in Vālukāprabhā, ten lākha in Paṅkaprabhā earth, three lākha in Dhūmaprabhā, five less one lākha in Tamaḥprabhā and five holes in Mahātamaḥprabhā.

These holes are of three kinds - Indraka, Śreṇībaddha and Puṣpaprakīrṇaka. The central holes (dwelling places) in each layer; are known as 'Indraka Bilas'. The holes located in all the four geographical directions and sub-directions arranged in rows are known as 'Śreṇībaddha Bilas'. Those Bilas which are scattered like flowers without any order and having no consideration of geographical directions or sub-directions are known as 'Prakīrṇaka Bilas' (Puṣpa-Prakīrṇaka).

नारका नित्याशुभतरलेश्यापरिणामदेहवेदनाविक्रियाः ।।३।।

(नारकाः नित्य-अशुभतर-लेश्या-परिणाम-देह-वेदना-विक्रियाः।)

Nārakā Nityāśubhataraleśyāpariṇāmadehavedanāvikriyāḥ. (3)

शब्दार्थ : **नारकाः –** नारकी; **नित्याशुभतरलेश्या –** नित्य अशुभतर लेश्या; **परिणाम –** (अशुभतर) भाव; **देह –** (अशुभ) शरीर; **वेदना –** कष्ट; **विक्रियाः –** (अशुभतर) विक्रिया।

Meaning of Words : **Nārakāḥ -** hellish beings; **Nityāśubhataraleśyā -** (have) always inauspicious colouration; **Pariṇāma -** (most inauspicious) feelings; **Deha -** (disproportinate) body; **Vedanā -** (physical & mental) sufferings; **Vikriyāḥ -** body transformation.

सूत्रार्थ : नारकी जीव निरन्तर अशुभतर लेश्या, परिणाम, देह, वेदना और विक्रिया वाले होते हैं।

English Rendering : These hellish beings are ever characterized by increasingly inauspicious thought colouration, inauspicious feelings, ugly bodies, agony and appalling body transformation.

टीका : इन सात पृथिवियों में स्थित नारकियों की लेश्या, परिणाम, देह, वेदना और विक्रिया भी उत्तरोत्तर अशुभतर होती है। अर्थात् प्रथम पृथिवी में स्थित नारकियों की अपेक्षा से द्वितीय पृथिवी में स्थित नारकियों में, द्वितीय पृथिवी की अपेक्षा से तृतीय पृथिवी तक के नारकियों में और इसी प्रकार क्रमशः सातवीं पृथिवी तक के नारकियों में अशुभतर लेश्या आदि होते हैं। किन्तु प्रथम पृथिवी में स्थित नारकियों की लेश्या आदि तिर्यञ्चों की अपेक्षा ही अशुभतर होती है। नारकियों में तीन अशुभ लेश्याएँ – कापोत, नील और कृष्ण ही होती हैं। प्रथम भूमि में जघन्य कापोत, दूसरी भूमि में मध्यम कापोत, तृतीय भूमि में ऊपर उत्कृष्ट कापोत एवं नीचे जघन्य नील, चौथी भूमि में मध्यम नील, पाँचवीं भूमि में ऊपर उत्कृष्ट नील और नीचे जघन्य कृष्ण, छठवीं भूमि में मध्यम कृष्ण और सातवीं भूमि में परम यानी उत्कृष्ट कृष्ण लेश्या नारकी

जीवों की होती है। सभी नारकियों की द्रव्य लेश्या यानी शरीर का रङ्ग उनकी आयु पर्यन्त एक-सा रहता है, लेकिन भाव लेश्याएँ अन्तर्मुहूर्त में परिवर्तित होती रहती हैं।

अशुभतर परिणाम से यहाँ स्पर्श, रस, गन्ध, वर्ण और शब्द लिए गए हैं। ये क्षेत्र विशेष के निमित्त से अशुभतर दुःख के कारण हैं। इन पृथिवियों में भूमि मात्र के स्पर्श से हजारों बिच्छुओं के काटने से जैसी वेदना होती है, वैसी वेदना होती है। यहाँ अत्यन्त अशुभ और भयङ्कर दुर्गन्ध नित्य बनी रहती है। सातों भूमियों में नारकियों के शरीर अशुभ नामकर्म के उदय से उत्तरोत्तर परिणाम यानी स्पर्श, रस, गन्ध, वर्ण, शब्द आदि बीभत्स रूप होते हैं। उनकी देह की विकृत आकृति, हुण्डक संस्थान होता है और वे देखने में बुरे लगते हैं।

सातों भूमियों में नारकियों में वेदना उत्तरोत्तर तीव्र होती है। प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ भूमियों में उष्ण वेदना वाले नरक हैं। पाँचवीं भूमि के ऊपरी 2/3 भाग में स्थित नरकों में उष्ण वेदना है और शेष 1/3 भागवर्ती नरकों में, छठवीं भूमि और सातवीं भूमि में शीत वेदना वाले नरक हैं। यहाँ उष्ण और शीत वेदना इतनी तीव्र होती है जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते।

उनकी विक्रिया भी उत्तरोत्तर अशुभ होती है। वे दुःख से घबराकर छुटकारे के लिये प्रयत्न करते हैं, परन्तु उल्टा होता है। सुख के साधन जुटाने में उनको दुःख के साधन ही प्राप्त होते हैं। वे अपने शरीर की केवल अपृथक् विक्रिया ही कर सकते हैं।

Comments : The hellish beings residing in these seven layers of earth are characterized by successively ever increasing degree of impurity in their inauspicious thought colouration, inauspicious feelings, ugly shape of body, agony and appalling transformation. That is, those in second earth have much more inauspicious thought-colouration etc. in comparision to the ones in first earth, those in third have more in comparision to those in second earth and likewise gradually increasing inauspicious up to seventh earth. Those who are residing in first earth have increasing inauspicious thought-colouration etc. as compared to those of Tiryañcas. The hellish beings have three kinds of inauspicious thought-colouration - grey, blue and black. In the first earth, it is mildest grey, in the second it is mild grey and in the third earth upper part, it is intense grey and in lower part it is mildest blue. In the fourth earth, it is mild blue and in the upper part of fifth earth it is blue and in the lower

part it is mildest black. In the sixth earth it is black and in the seventh earth it is extremely black. Physical complexion of all the hellish beings remain the same till the end of their life-span but thought-colouration go on changing within one Antarmuhūrta.

The inauspicious volitions here are in the context of the touch, the taste, the smell, the colour and the sound. These are more & more inauspicious due to the adverse ghastly pain connected with the prevailing with the particular region. The mere touch of the earth causes as much pain as would be experienced on biting by thousands scorpions at a time. These regions continue to have extremely inauspicious and intolrant foul smell. The bodies of all the hellish beings of all the seven layers of earth are extremely disgusting and more & more deformed due to rise of inauspicious Nāmakarma in the context of their touch, taste, smell, colour & sound. Their bodies are of deformed structure and disgusting to look at.

The pain in all the seven earths is intenser & intenser as we go down. From the first to fourth earth, agony of heat dominates. The first two-third part of the fifth earth suffers from agony of heat and remaining one-third part of the fifth earth to seventh earth suffer from agony of cold. The agony of heat & cold in these layers of earth is so intense that it is beyond imagination.

Their transformations (Self wrought body transformation) are also far & far inauspicious. Being horrified by sufferings they try to escape from the agony but it turns to be opposit. Their efforts for happiness get converted into those of pain. They can only transform their own bodies but can not do transformation separate from their bodies or independent of their bodies.

नारकियों के अन्य दुःख
Other Sufferings of Hellish Beings

परस्परोदीरितदुःखाः ।।४।।

(परस्पर-उदीरित-दुःखाः।)

Parasparodīritaduḥkhāḥ. (4)

शब्दार्थ : **परस्पर –** आपस में; **उदीरित –** उत्पन्न किये गये; **दुःखाः –** दुःख वाले (होते हैं)।

Meaning of Words : **Paraspara -** with one another; **Udīrita -** causing; **Duḥkhāḥ** - pain & suffering (also).

सूत्रार्थ : (तथा वे) आपस में दुःख वाले होते हैं।

English Rendering : And they inflict pain & suffering mutually on one to another.

टीका : नारकी अवधिज्ञान अथवा कुअवधिज्ञान (विभङ्गज्ञान) के बल से अपने दुःखों के कारणों को जानकर दुःखी हो जाते हैं, तथा उसी के फलस्वरूप अपने बैरी को देखते ही क्रोधानल से व्याप्त हो बैर की गाँठ को दृढ़तर कर लेते हैं। इस कारण वे कुत्ता और गीदड़ के समान एक दूसरे को मारने के लिए तत्पर रहते हैं, मारते हैं। वे अपने शरीर की विक्रिया से तलवार, बसूला, फरसा, वर्छी आदि अस्त्र-शस्त्र बनाकर परस्पर अति तीव्र दुःख उत्पन्न करते हैं।

Comments : The hellish beings are able to foresee the causes of their pain on the strength of their power of clairvoyance or inauspicious clairvoyance and suffer from anguish and hence when they come close to their enemies (of their previous life-course) they resort to extreme rage and make the enmity bitter and bitter. This makes them attack, strike and fight against one another like dogs & jackals. By power of changing their body-forms, they produce weapons such as sword, hatchet, axe, spear etc. and indulge in inflicting extreme injuries (on one another).

असुरों द्वारा नारकियों को दुःख देना
Sufferings of Hellish Beings Caused by Asuras

सङ्क्लिष्टासुरोदीरितदुःखाश्च प्राक् चतुर्थ्याः ।।५ ।।

(सङ्क्लिष्ट-असुर-उदीरित-दुःखाः च प्राक् चतुर्थ्याः।)

Saṅkliṣṭāsurodīritaduḥkhāśca Prāk Caturthyāḥ.

शब्दार्थ : **सङ्क्लिष्टासुरोदीरितदुःखाश्च –** और सङ्क्लिष्ट परिणाम वाले असुरों के द्वारा उत्पन्न किये गये दुःख; **प्राक् चतुर्थ्याः –** चौथी पृथिवी से पहले तक (अर्थात् तीसरी पृथिवी के अन्त तक)।

Meaning of Words : **Saṅkliṣṭāsurodīritaduḥkhāśca -** and malevolent (i.e. evilminded) Asurakumāra celestials cause incitement for torture; **Prāk Caturthyāḥ** - prior to the fourth hellish earth i.e. up to the end of third hellish earth.

सूत्रार्थ : सङ्क्लिष्ट परिणाम वाले असुरकुमार जाति के देव चौथी पृथिवी से पहले तक अर्थात् तीसरी पृथिवी के अन्त तक नारकियों को दुःख उत्पन्न करते हैं।

English Rendering : Prior to the fourth hellish earth i.e. up to the end of third hellish earth, the malevolent celestial beings called Asurakumāras incite the hellish beings to inflict terrible pain & torture on one another.

टीका : अम्ब-अम्बरीष आदि कुछ असुरकुमार जाति के देव प्रथम तीन पृथिवियों तक जाकर नारकियों को परस्पर पूर्वबद्ध बैर का स्मरण कराकर लड़ाते हैं। उन्हें लड़ते हुए देखकर इन देवों को आनन्द आता है, कुतूहल होता है। ये देव तीसरी पृथिवी से आगे जाने की सामर्थ्य नहीं रखते। वे स्वयं भी नारकियों को विभिन्न प्रकार की यातनाएँ देते हैं।

Comments : Some Asurakumāra category - Amba-Ambarīṣa etc. celestial beings make the hellish beings residing in first three layers of earth to recollect their previous birth enmities by visiting them and make them quarrel. These celestial beings derive peculiar pleasure and enjoyment by seeing them fighting. These celestial beings do not have capabilities to go beyond the third earth. They themselves also inflict many kinds of injuries & sufferings on the hellish beings.

नारकियों की उत्कृष्ट स्थिति
Maximum Life-span of Hellish Beings

तेष्वेकत्रिसप्तदशसप्तदशद्वाविंशतित्रयस्त्रिंशत्सागरोपमा सत्त्वानां परा स्थितिः ।।६।।

(तेषु एक-त्रि-सप्त-दश-सप्तदश-द्वाविंशति-त्रयस्त्रिंशत्-
सागरोपमा सत्त्वानां परा स्थितिः।)

Teṣvekatrisaptadaśasaptadaśadvāviṁśatitrayastriṁśat-sāgaropamā Sattvānāṁ Parā Sthitiḥ. (6)

शब्दार्थ : **तेषु** – उन (नरकों) में; **एक** – एक; **त्रि** – तीन; **सप्त** – सात; **दश** – दश; **सप्तदश** – सत्रह; **द्वाविंशति** – बाईस; **त्रयस्त्रिंशत्** – तैंतीस; **सागरोपमा** – सागरोपम प्रमाण; **सत्त्वानाम्** – प्राणियों की; **परा** – उत्कृष्ट; **स्थितिः** – आयु।

Meaning of Words : **Teṣu -** in those (hells); **Eka -** one; **Tri -** three; **Sapta -** seven; **Daśa -** ten; **Saptadaśa -** seventeen; **Dvāviṁśati -** twenty-two; **Trayastriṁśat -** thirty-three; **Sāgaropamā -** extent of Sāgara; **Sattvānām -** of the (hellish) beings; **Parā -** maximum; **Sthitiḥ -** life span.

सूत्रार्थ : उन नरकों में नारकियों की उत्कृष्ट स्थिति (आयु) क्रमशः एक सागरोपम, तीन सागरोपम, सात सागरोपम, दश सागरोपम, सत्रह सागरोपम, बाईस सागरोपम और तैंतीस सागरोपम प्रमाण है।

English Rendering : In these hells the maximum duration of life of the hellish beings is one, three, seven, ten, seventeen, twenty-two and thirty-three Sāgaropama respectively.

टीका : इस सूत्र में नारकी जीवों की अधिकतम आयु का विवरण दिया गया है। प्रथम पृथिवीगत नरकों में रहने वाले नारकियों की अधिकतम आयु एक सागरोपम है, द्वितीय पृथिवी में तीन सागरोपम, तृतीय पृथिवी में सात सागरोपम, चतुर्थ पृथिवी में दस सागरोपम, पञ्चम पृथिवी में सत्रह सागरोपम, छठवीं पृथिवी में बाईस सागरोपम और सप्तम पृथिवी में तैंतीस सागरोपम है।

असञ्ज्ञी जीव पहली पृथिवी तक, सरीसृप दूसरी तक, पक्षी तीसरी तक, सर्प चौथी तक, सिंह पाँचवीं तक, स्त्रियाँ छठवीं तक तथा मत्स्य और मनुष्य सातवीं पृथिवी तक उत्पन्न होते हैं। देव नरक में और नारकी देवों में उत्पन्न नहीं हो सकते। पहली पृथिवी में उत्पन्न होने वाले मिथ्यात्वी नारकी कोई मिथ्यात्व के साथ, कोई सासादन के साथ और कोई सम्यक्त्व को प्राप्त कर निकलते हैं। पहली पृथिवी में उत्पन्न होने वाले बद्धायुष्क क्षायिक सम्यग्दृष्टि सम्यग्दर्शन के साथ ही निकलते हैं। दूसरी से छठवीं तक पाँच पृथिवियों में उत्पन्न मिथ्यादृष्टि नारकी कुछ मिथ्यात्व के साथ, कुछ सासादन के साथ और कुछ सम्यक्त्व प्राप्त कर निकलते हैं। सातवीं पृथिवी में मिथ्यात्व के साथ ही प्रविष्ट होते हैं तथा मिथ्यात्व के साथ ही निकलते हैं।

पहली से छठवीं पृथिवी तक के नारकी मिथ्यात्व और सासादन के साथ निकलकर तिर्यञ्च और मनुष्य रूप दो गतियों को प्राप्त करते हैं। तिर्यञ्चों में पञ्चेन्द्रिय, गर्भज, सञ्ज्ञी, पर्याप्तक, सङ्ख्यात वर्ष के आयु वाले तिर्यञ्च होते हैं। मनुष्यों में गर्भज, पर्याप्तक, सङ्ख्यात वर्ष आयु वाले मनुष्य होते हैं। नरक गति सहित सभी गतियों में भी सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान के साथ जन्म एवं मरण दोनों ही नहीं होता। सम्यग्दृष्टि नारकी सम्यक्त्व के साथ निकलकर केवल मनुष्य गति में ही जाते हैं। मनुष्यों में भी गर्भज, पर्याप्तक, सङ्ख्यात वर्ष की आयु वाले मनुष्यों में ही उत्पन्न होते हैं। सातवीं पृथिवी से नारकी मिथ्यात्व के साथ निकलकर एक मात्र तिर्यञ्च गति में ही जाते हैं और तिर्यञ्चों में भी पञ्चेन्द्रिय, गर्भज, सङ्ख्यात वर्ष की आयु वाले ही होते हैं। वहाँ उत्पन्न होकर भी मति, श्रुत, अवधिज्ञान, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व और संयमासंयम को उत्पन्न नहीं कर सकते। छठवीं पृथिवी से निकलकर तिर्यञ्च और मनुष्यों में उत्पन्न हुए कोई जीव मति, श्रुत, अवधिज्ञान, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व और देशसंयम – इन छह को प्राप्त कर सकते हैं। पाँचवीं पृथिवी से निकलकर तिर्यञ्चों में उत्पन्न हुए कोई जीव उपरिलिखित छह स्थानों को प्राप्त कर सकते हैं। मनुष्यों में उत्पन्न हुए कोई जीव उक्त छह के साथ ही साथ सकल संयम और मनःपर्ययज्ञान को भी प्राप्त कर सकते हैं। चौथी पृथिवी से निकलकर तिर्यञ्चों में उत्पन्न हुए कोई जीव मति आदि छह को ही प्राप्त कर सकते हैं, अधिक को नहीं। मनुष्यों में उत्पन्न हुए जीव केवलज्ञान को भी प्राप्त कर सकते हैं, मोक्ष जा सकते हैं। परन्तु बलदेव, वासुदेव, चक्रवर्ती और तीर्थङ्कर नहीं हो सकते। पहले से तीसरी पृथिवी तक के तिर्यञ्चों में उत्पन्न हुए जीव उपरिलिखित छह स्थानों को प्राप्त कर सकते हैं। मनुष्यों

में उत्पन्न हुए जीव तीर्थङ्कर भी हो सकते हैं, मोक्ष भी जा सकते हैं; परन्तु बलदेव, वासुदेव और चक्रवर्ती नहीं हो सकते।

Comments : In this Sūtra, description of maximum life-span of hellish beings is given. The infernal beings residing in first earth have maximum span of one Sāgaropama, in second earth of three Sāgaropama, in third earth of seven Sāgaropama, in fourth earth of ten Sāgaropama, in fifth earth of seventeen Sāgaropama, in sixth earth of twenty-two Sāgaropama and in the seventh earth of thirty-three Sāgaropama.

Living beings without mental faculty can take birth only in first earth; reptiles (crowling living beings) up to second earth, birds up to third earth, snakes up to fourth earth, lions up to fifth earth, women up to sixth earth and fish and men up to seventh earth. Celestial beings can not take birth in hell nor can hellish beings as celestials. Amongst the wrong believers hellish beings of first earth, some come out of it with wrong faith, some with Sāsādana (in second stage of spiritual development) and some with Right Faith. The beings who had bound Āyukarma in their previous birth before attaining destructive type of Right Faith, taking birth in the first earth do come-out only with Right Faith. Some of the wrong believer hellish beings who are born in second to sixth earth i.e. in five earths come-out with wrong faith, some with Sāsādana and some after attaining Right Faith. Hellish beings in the seventh earth are born with wrong faith and also come-out from there only with wrong faith.

Hellish beings residing in first to sixth earth having wrong faith and Sāsādana volitions take birth as Tiryañcas' life-course or human beings life-course. If born as Tiryañcas, they take birth equipped with all five sense organs, uterine birth, mental faculty, developed physical body characteristics and with numerable years of age. There is no death or birth in all life-courses including hellish life-course in the state of right-wrong faith spiritual development. Those hellish beings who have attained Right Faith take their next birth only in the life-course of human beings. Amongst human beings also, they migrate to take birth

in uterine, develope fully their body characteristics and have numerable years of age. Hellish beings of the seventh earth having wrong faith migrate to take their next birth only in the life-course of Tiryañcas. Amongst Tiryañcas also, they take birth with all the five sense organs, uterine birth and numerable years of age. Having taken birth there, they can not attain sensory knowledge, scriptural knowledge, clairvoyance, right faith, right-wrong faith and partial vows. Those who migrate from sixth earth to take their next birth as Tiryañcas and human beings, some of them can attain sensory knowledge, scriptural knowledge, clairvoyance, right faith, right-wrong faith and partial vows- all six; those migrating from fifth earth to take birth as Tiryañcas can attain all the above six stages. If they take birth as human beings, in additions to the above six stages, they can also attain complete vows (i.e. Great Vows) and also mind reading knowledge. Those migrating from fourth earth to take birth as Tiryañcas can only attain six stages of sensory knowledge etc. stated above, not more. Those taking birth as human beings, can attain omniscience and salvation, but can not become Baladeva, Vāsudeva, Cakravartī and Tīrthaṅkara. Those who migrate from first to third earth to take birth as Tiryañcas can only attain six stages. Those to be born as human beings can take birth as Tīrthaṅkara and attain salvation but can not become Baladeva, Vāsudeva or Cakravartī.

मध्य लोक – द्वीप और समुद्र
Middle World - Continents and Oceans

जम्बूद्वीपलवणोदादयः शुभनामानो द्वीपसमुद्राः ।।७।।

(जम्बूद्वीप-लवण-उद-आदयः शुभ-नामानः द्वीप-समुद्राः।)

Jambūdvīpalavaṇodādayaḥ Śubhanāmāno Dvīpasamudrāḥ. (7)

शब्दार्थ : **जम्बूद्वीपलवणोदादयः** – जम्बूद्वीप और लवणोद आदि; **शुभनामानः** – शुभ नामवाले; **द्वीपसमुद्राः** – द्वीप और समुद्र (हैं)।

Meaning of Words : **Jambūdvīpalavaṇodādayaḥ -** starting with Jambūdvīpa and Lavaṇa ocean etc.; **Śubhanāmānaḥ -** having auspicious names; **Dvīpasamudrāḥ -** Dvīpa (continents) and oceans exist.

सूत्रार्थ : (मध्य लोक में) जम्बूद्वीप और लवण समुद्र को आदि करके शुभ नामवाले (असंख्यात) द्वीप और समुद्र हैं।

English Rendering : (In the middle part of the Loka) starting with Jambūdvīpa and Lavaṇa Samudra, there are (innumerable) continents and oceans bearing auspicious names.

टीका : मध्य लोक में असंख्यात द्वीप और समुद्र हैं। प्रथम द्वीप जम्बूद्वीप है और उसको घेरे हुए लवण समुद्र है। ऐसे शुभ नामवाले द्वीप और समुद्रों के पश्चात् अन्तिम द्वीप एवं समुद्र क्रमशः स्वयम्भूरमण द्वीप और स्वयम्भूरमण समुद्र है। जम्बूद्वीप का नाम उत्तरकुरु भोगभूमि में अवस्थित जम्बू वृक्ष से उपलक्षित होने से रखा गया है। यह जम्बू वृक्ष शाश्वत, अकृत्रिम, पृथिवीकाय का और अनादि-निधन है (देखें, चित्र पृष्ठ ४६० पर)।

Comments : In Madhya Loka (middle world), there are innumerable continents and oceans. The first continent is Jambūdvīpa surrounded by Lavaṇa ocean. After such auspicious named continents and oceans, the last one continent and ocean is Svayambhūramaṇa Dvīpa and Svayambhūramaṇa ocean respectively. The name Jambūdvīpa is designated due to the fact that Jambū tree exists in Uttarakuru Bhogabhūmi (pleasure-land). The Jambū tree is eternal, natural, earth bodied and exists there from beginning-less times and shall remain so, for end-less times (See, Map in Page 460).

द्वीप-समुद्रों का विस्तार

Extent of Continents and Oceans

द्विर्द्विर्विष्कम्भाः पूर्वपूर्वपरिक्षेपिणो वलयाकृतयः ।।८।।

(द्विः-द्विः-विष्कम्भाः पूर्व-पूर्व-परिक्षेपिणः वलय-आकृतयः।)

Dvirdvirviṣkambhāḥ Pūrvapūrvaparikṣepiṇo Valayākṛtayāḥ.(8)

शब्दार्थ : **द्विर्द्विर्विष्कम्भाः –** दूने-दूने विस्तार वाले; **पूर्वपूर्वपरिक्षेपिणः –** पूर्व-पूर्व के (द्वीप और समुद्र) को घेरे हुए; **वलयाकृतयः –** वलय के आकार वाले।

Meaning of Words : **Dvirdvirviṣkambhāḥ -** having double extent of each; **Pūrvapūrvaparikṣepiṇaḥ -** encircling the previous continents & oceans; **Valayākṛtayāḥ -** circular (in shape) like a bangle.

सूत्रार्थ : (वे आगे-आगे के द्वीप-समुद्र) दूने-दूने विष्कम्भ विस्तार वाले हैं; पूर्व-पूर्व के द्वीप-समुद्र को घेरे हुए हैं तथा वलय के आकार वाले हैं।

English Rendering : (These continents and oceans) are double in extent of the preceding ones and are circular in shape like a bangle, each encircling the immediately preceding one.

टीका : प्रथम द्वीप – जम्बूद्वीप से लवण समुद्र का विस्तार दूना है। उससे आगे-आगे के द्वीप-समुद्रों का विस्तार पहले-पहले के द्वीप-समुद्रों से दूना-दूना होता है। ये द्वीप और समुद्र एक दूसरे को घेरे हुए हैं और चूड़ीवत् वलयाकार हैं।

Comments : The extent (diameter) of Lavaṇa ocean is double the extent of the first continent Jambūdvīpa. The extent of the succeeding continents and oceans is double that of the preceding continents and oceans. And these continents and oceans are encircling one another having a bangle like circular shape.

जम्बूद्वीप का वर्णन

Description of Jambūdvīpa

तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजनशतसहस्रविष्कम्भो जम्बूद्वीपः ।।९।।

(तत्-मध्ये मेरुनाभिः वृत्तः योजन-शत-सहस्र-विष्कम्भः जम्बूद्वीपः।)

Tanmadhye Merunābhirvṛtto
Yojanaśatasahasraviṣkambho Jambūdvīpaḥ. (9)

शब्दार्थ : **तन्मध्ये** – उन (द्वीप-समुद्रों) के बीच में; **मेरुनाभिः** – मेरु (रूपी) नाभि (से युक्त); **वृत्तः** – गोल; **योजनशतसहस्रविष्कम्भः** – एक लाख योजन विस्तार वाला; **जम्बूद्वीपः** – जम्बूद्वीप (है)।

Meaning of Words : **Tanmadhye -** in the centre of those (continents & oceans); **Merunābhiḥ -** Meru like a navel in a human body; **Vṛttaḥ -** round; **Yojanaśatasahasraviṣkambhaḥ -** one lākha Yojana in extent (dia-meter); **Jambūdvīpaḥ -** (exists) Jambūdvīpa.

सूत्रार्थ : उन सब द्वीप-समुद्रों के मध्य में गोल एवं एक लाख योजन विष्कम्भ (व्यास) वाला जम्बूद्वीप है; जिसके मध्य में नाभि के समान मेरु पर्वत है।

English Rendering : In the centre of these continents & oceans is Jambūdvīpa which is round and is having one lākha Yojana as its dia-meter. Mount Meru is at the centre of this continent like a navel in a human body.

टीका : सब द्वीप और समुद्रों के मध्य में जम्बूद्वीप है (देखें, चित्र पृष्ठ 'ई' पर)। सभी द्वीप और समुद्र चूड़ी के समान गोल हैं। लेकिन जम्बूद्वीप की आकृति थाली के समान है। इसका व्यास एक लाख योजन प्रमाण है। इसके मध्य में सुमेरु पर्वत है (देखें, चित्र पृष्ठ LXIV पर)। सुमेरु पर्वत की ऊँचाई कुल एक लाख चालीस योजन है; जिसमें से एक हजार योजन समतल से नीचे है। निन्यानवे हजार योजन का भाग भूमि के ऊपर है। प्रारम्भ में जमीन पर मेरु पर्वत का व्यास दस हजार योजन है; जो ऊपर क्रम से घटता गया है। जिस हिसाब से ऊपर घटा है उसी हिसाब से जमीन के भीतर उसका व्यास बढ़ा है। बाहरी भाग के ऊपर का अंश, जहाँ से चूलिका निकलती है, वहाँ एक हजार योजन विस्तार है। मेरु के तीन काण्ड हैं। वह चार वनों से घिरा है। प्रथम काण्ड जमीन से पाँच सौ योजन का है, दूसरा साढ़े बासठ हजार योजन का और तीसरा छत्तीस हजार योजन का है। पहले काण्ड में शुद्ध पृथिवी, बालू आदि की, दूसरे में चाँदी, स्फटिक आदि की और तीसरे में स्वर्ण की प्रचुरता है। चार वनों के नाम क्रमशः भद्रशाल, नन्दन, सौमनस और पाण्डुक हैं। एक लाख योजन के बाद एक चूलिका है, जो चालीस योजन ऊँची है। वह मूल में बारह योजन, बीच में आठ योजन और ऊपर चार योजन विस्तार वाली है।

पाण्डुक वन में चारों दिशाओं में चार पाण्डुक शिलाएँ हैं, जिन पर उस-उस दिशा के क्षेत्रों में उत्पन्न हुए बाल्य तीर्थङ्कर जीव का जन्म अभिषेक होता है।

Comments : In the centre of all the continents & oceans is located Jambūdvīpa (See, Map in Page Ī). All the continents & oceans are round like a bangle but Jambūdvīpa has a shape like a saucer (plate). Extent of its diameter is one Lākha Yojana. At the centre of this is mount Sumeru (See, Map in Page LXIV). The total height of this Sumeru mountain is one lākha & forty Yojana; out of which one thousand Yojana is below the ground level and ninety-nine thousand Yojana is above the ground level. At the ground level to start with, the diameter of Meru mountain is ten thousand Yojana which reduces gradually at higher levels. It increases below the ground level in the same proportion as it decreases above the ground level. At top portion of this, from where the peak starts, the diameter is one thousand Yojana. Meru is divided in to three parts. It is surrounded by four forests. First part is at the height of five hundred Yojana from the ground level; the second part or split is of sixty-two thousand & five hundred Yojana and the third is of thirty-six thousand Yojana. The first part mainly consists of pure earth, sand etc.; second silver, quartz etc. and the third part mainly consists of gold. The names of four forests are Bhadraśāla, Nandana, Saumanasa and Pāṇduka. There is a peak at the end after one Lākha Yojana height. It is forty Yojana in height. At the base it is of twelve Yojana diameter, in the middle eight Yojana and at the top four Yojana.

There are four Pāṇduka Śilās in all the four directions in the Pāṇduka forest. The anointment ceremony of the newly born child Tīrthaṅkara of the respective geographical directions is performed on these Śilās.

जम्बूद्वीप में स्थित क्षेत्र

Regions of Jambūdvīpa

भरतहैमवतहरिविदेहरम्यकहैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि ।।१०।।

(भरत-हैमवत-हरि-विदेह-रम्यक-हैरण्यवत-ऐरावत-वर्षाः क्षेत्राणि।)

Bharatahaimavataharivideharamyakahairaṇyavatairāvatavarṣāḥ Kṣetrāṇi. (10)

शब्दार्थ : **भरतहैमवतहरिविदेहरम्यकहैरण्यवतैरावतवर्षाः –** भरतवर्ष, हैमवतवर्ष, हरिवर्ष, विदेहवर्ष, रम्यकवर्ष, हैरण्यवतवर्ष और ऐरावतवर्ष; **क्षेत्राणि –** क्षेत्र (हैं)।

Meaning of Words : **Bharatahaimavataharivideharam-yakahairaṇyavatairāvatavarṣāḥ -** Bharatavarṣa, Haimavatavarṣa, Harivarṣa, Videhavarṣa, Ramyakavarṣa, Hairaṇyavatavarṣa and Airāvatavarṣa; **Kṣetrāṇi -** (are) regions.

सूत्रार्थ : भरतवर्ष, हैमवतवर्ष, हरिवर्ष, विदेहवर्ष, रम्यकवर्ष, हैरण्यवतवर्ष और ऐरावतवर्ष – ये सात क्षेत्र जम्बूद्वीप के हैं।

English Rendering : Bharatavarṣa, Haimavatavarṣa, Harivarṣa, Videhavarṣa, Ramyakavarṣa, Hairaṇyavatavarṣa and Airāvatavarṣa are seven regions of Jambūdvīpa.

टीका : जम्बूद्वीप में सात क्षेत्र हैं। इनमें पहला भरतवर्ष दक्षिण दिशा की ओर है। भरतवर्ष के उत्तर में हैमवतवर्ष, हैमवत के उत्तर में हरिवर्ष, हरिवर्ष के उत्तर में विदेहवर्ष, विदेहवर्ष के उत्तर में रम्यकवर्ष, रम्यकवर्ष के उत्तर में हैरण्यवतवर्ष और हैरण्यवतवर्ष के उत्तर में ऐरावतवर्ष है।

उत्तर दिशा में हिमवान् पर्वत और शेष तीन दिशाओं में लवण समुद्र के मध्य में भरतवर्ष यानी भरतक्षेत्र है (देखें, चित्र पृष्ठ २९० पर)। इस क्षेत्र के गङ्गा, सिन्धु और विजयार्ध पर्वत से विभक्त होकर छह खण्ड हो जाते हैं। हिमवान् पर्वत के दक्षिण में और तीन दिशाओं में समुद्र के बीच में स्थित भरतक्षेत्र चढ़े हुए धनुष के आकार वाला है। विजयार्ध पर्वत भरतक्षेत्र के बहुमध्य भाग में पूर्व-पश्चिम दिशा में स्थित है (देखें, चित्र पृष्ठ २९० पर)।

Comments : There are seven regions in Jambūdvīpa. Amongst these, the first region Bharatavarṣa is in the south direction. In the north of Bharatavarṣa, Haimavatavarṣa is situated; north of Haimavatavarṣa is Harivarṣa, north of Harivarṣa is Videhavarṣa; north of Videhavarṣa is Ramyakavarṣa; north of Ramyakavarṣa is Hairaṇyavatavarṣa and north of Hairaṇyavatavarṣa is Airavatavarṣa.

In the north of Bharata Kṣetra is Himavān mountain and on all other remaining three sides, it is encircled by Lavaṇa ocean (See, Map in Page 290). In the central part exists Bharatavarṣa or Bharatakṣetra. Gaṅgā, Sindhu and Vijayārdha mountain divide this region into six parts. Being in the south of Himavān mountain and encircled by ocean in three directions, Bharata Kṣetra looks like an arch with an arrow in position. Vijayārdha mountain is located in the major central part of Bharata Kṣetra expanding in the east-west direction (See, Map in Page 290).

जम्बूद्वीप में क्षेत्रों का विभाजन करने वाले पर्वत
Mountains Dividing the Regions of Jambūdvīpa

तद्विभाजिनः पूर्वापरायता हिमवन्महाहिमवन्निषध–
नीलरुक्मिशिखरिणो वर्षधरपर्वताः ।।११।।

(तत्-विभाजिनः पूर्व-अपर-आयताः हिमवन्-महाहिमवन्
निषध-नील-रुक्मि-शिखरिणः वर्षधर-पर्वताः।)

Tadvibhājinaḥ Pūrvāparāyatā Himavanmahāhimavanniṣadha-
Nīlarukmiśikhariṇo Varṣadharaparvatāḥ. (11)

शब्दार्थ : **तद्विभाजिनः –** उन (भरतक्षेत्र आदि) का विभाजन करने वाले; **पूर्वापरायताः –** पूर्व–पश्चिम तक लम्बे; **हिमवन्महाहिमवन्निषधनीलरुक्मि–शिखरिणः –** हिमवान्, महाहिमवान्, निषध, नील, रुक्मी और शिखरी; **वर्षधरपर्वताः –** वर्षधर पर्वत (हैं)।

Meaning of Words : **Tadvibhājinaḥ -** the one dividing those regions (Bharata Kṣhetra etc.) **Pūrvāparāyatāḥ -** extending in east-west direction; **Himavanmahāhimavanniṣadhanīlarukmiśikhariṇāḥ -** Himavān, Mahāhimavān, Niṣadha, Nīla, Rukmī and Śikharī; **Varṣadharaparvatāḥ. -** exist Varṣadhara Parvata.

सूत्रार्थ : भरत आदि सात क्षेत्रों का विभाग करने वाले पूर्व–पश्चिम तक लम्बे हिमवान्, महाहिमवान्, निषध, नील, रुक्मी और शिखरी – ये छह वर्षधर पर्वत हैं।

English Rendering : Bharata etc. regions are divided by six mountains named as Himavān, Mahāhimavān, Niṣadha, Nīla, Rukmī and Śikharī extending in east to west direction.

टीका : सात क्षेत्रों को एक-दूसरे से अलग करने वाले छह पर्वत हैं। ये सभी पूर्व-पश्चिम दिशा में स्थित हैं। भरत और हैमवत क्षेत्र के बीच हिमवान् पर्वत है। हैमवत और हरिवर्ष का विभाजक महाहिमवान् पर्वत है। हरिवर्ष और विदेह का विभाजक निषध पर्वत है। विदेह और रम्यकवर्ष का विभाजक नील पर्वत है। रम्यक और हैरण्यवत का विभाजक रुक्मी पर्वत है। हैरण्यवत और ऐरावत का विभाजक शिखरी पर्वत है।

ऊपर निर्दिष्ट ये सातों क्षेत्र थाली की आकृति वाले जम्बूद्वीप में पूर्वी छोर से पश्चिमी छोर तक विस्तृत लम्बे पट के रूप में एक के बाद एक अवस्थित हैं। विदेह क्षेत्र इन सबके मध्य में है। मेरु पर्वत विदेह क्षेत्र के ठीक मध्य में अवस्थित है। विदेह क्षेत्र से रम्यक क्षेत्र को नील पर्वत विभक्त करता है और हरिवर्ष क्षेत्र को निषध पर्वत विभक्त करता है। विदेह क्षेत्र में मेरु और नील पर्वत के बीच का अर्धचन्द्राकार भाग उत्तरकुरु है तथा मेरु और निषध पर्वत के बीच का वैसा ही अर्धचन्द्राकार भाग देवकुरु है (देखें, चित्र पृष्ठ ४६० पर)। देवकुरु और उत्तरकुरु - ये दोनों क्षेत्र विदेह अर्थात् महाविदेह के ही भाग हैं; परन्तु इन क्षेत्रों में युगलियों की आबादी होने से वे भिन्न रूप से पहचाने जाते हैं। देवकुरु और उत्तरकुरु के भाग का क्षेत्र छोड़ने पर महाविदेह के अवशिष्ट पूर्व और पश्चिम भाग में सोलह-सोलह विभाग हैं। इस प्रकार सुमेरु पर्वत के पूर्व और पश्चिम दोनों ओर मिलाकर कुल बत्तीस विभाग हैं।

उत्तरकुरु और देवकुरु उत्तम भोगभूमियाँ हैं। ढाई द्वीप में पञ्चमेरु सम्बन्धी पाँच भरत, पाँच ऐरावत और पाँच विदेह - ये पन्द्रह कर्मभूमियाँ हैं। पाँच देवकुरु और पाँच उत्तरकुरु में दस उत्तम भोगभूमियाँ हैं। पाँच हरि व पाँच रम्यक क्षेत्र में मध्यम भोगभूमियाँ हैं और पाँच हैमवत व पाँच हैरण्यवत में जघन्य भोगभूमियाँ हैं। इस प्रकार कुल तीस भोगभूमियाँ हैं।

Comments : There are six mountains which separate the seven regions from one-another. All the dividing mountains span from east to west direction. In between Bharata and Haimavata regions, Himvān

mountain is located. The divider of Haimavata and Harivarṣa regions is Mahāhimavān mountain and that of Harivarṣa and Videha is Niṣadha mountain. Nīla mountain divides Videha and Ramyakavarṣa. Rukmī mountain divides Ramyaka and Hairaṇyavata and Śikharī mountain divides Hairaṇyavata and Airāvata.

The seven regions stated above are located in the plate shaped Jambūdvīpa and are spanning like a long belt from east to west, one after the other. Videha region is located in the centre of all these. Meru mountain is situated exactly at the centre of Videha. Videha region is separated from Ramyaka region by Nīla mountain and Harivarṣa region by Niṣadha mountain. The central part in between Meru and Nīla mountain in Videha region is Uttarakuru having a crescent shape and an identical part having crescent shape between Meru and Niṣadha mountain is Devakuru (See, Map in page 460). Devakuru and Uttarakuru - both regions are part of Videha region i.e. Mahāvideha region but because they are inhabited by the twins, they are differently identified. Deducting the areas of Devakuru and Uttarakuru, each east and west directional area of the remaining Mahāvideha region comprises of sixteen divisions. In this way, there are in all thirty-two parts of Videha region in east and west of Sumeru mountain.

Uttarakuru and Devakuru are Uttama Bhogabhūmi (superior pleasure lands). In the two & half continents related to Pañca Meru, there are five Bharata, five Airāvata and five Videha regions - in all fifteen lands of action (Karma Bhūmis). There are ten superior pleasure lands in five Devakuru and five Uttarakuru. There are medium pleasure lands in five Hari and five Ramyaka regions. The inferior pleasure lands are located in five Haimavata and five Hairaṇyavata regions. Thus in all, there are thirty pleasure lands.

पर्वतों के वर्ण
Colour of Mountains

हेमार्जुनतपनीयवैडूर्यरजतहेममयाः ।।१२।।

(हेम-अर्जुन-तपनीय-वैडूर्य-रजत-हेममयाः।)

Hemārjunatapanīyavaiḍūryarajatahemamayāḥ. (12)

शब्दार्थ : **हेमार्जुनतपनीयवैडूर्यरजतहेममयाः –** (पूर्व सूत्र में कहे गए वे पर्वत क्रमशः) सोना, चाँदी, तपाया हुआ सोना, वैडूर्यमणि, चाँदी और सोना के समान वर्ण वाले हैं।

Meaning of Words : **Hemārjunatapanīyavaiḍūrya-rajatahemamayāḥ. -** (mountains described in the previous Sūtra) are of golden, silver white, red-hot golden, blue like neck of peacock, silver white and golden in colour.

सूत्रार्थ : पूर्व सूत्र में कहे गए पर्वत क्रमशः सोना, चाँदी, तपाया हुआ सोना, वैडूर्यमणि, चाँदी और सोना के समान रङ्गवाले हैं।

English Rendering : The mountains described in the earlier Sūtra are of golden, silver white, red-hot golden, blue like peacock neck, silver white and golden colour.

टीका : इस सूत्र में जो भरत आदि क्षेत्रों का विभाजन करते हैं, उन पर्वतों के वर्ण का कथन है। हिमवान् पर्वत सुवर्णमय अर्थात् चीनपट्ट/चीनी रेशम के समान, महाहिमवान् पर्वत चाँदी के समान शुक्ल वर्ण, निषध पर्वत तपाये हुए सोना के समान या उगते हुए बाल सूर्य के वर्ण के समान, नील पर्वत वैडूर्यमय (मयूर कण्ठ के समान), रुक्मी पर्वत चाँदी के शुक्ल वर्ण के समान और शिखरी पर्वत चीनी रेशम के समान स्वर्णमय है।

कुछ आचार्यों का कहना है कि 'मयट्' प्रत्यय तन्मय के अर्थ में प्रयुक्त होता है, इसलिए ये सभी पर्वत उस रङ्ग के नहीं, बल्कि तत् मय हैं यानि सोने के रङ्ग वाला सोने का ही पर्वत है व चाँदीवाला चाँदी का ही पर्वत है।

Comments : In this Sūtra, colour of those mountains which divide the Bharata etc. regions is given. The colour of Himavān mountain is golden like Chinese silk i.e. Cina patta; white like silver of Mahāhimavān, like molten or melted gold of Niṣadha mountain or the colour of rising sun. Nīla mountain colour is blue like neck of a peacock. Rukmī mountain is sīlver-white and Śikharī mountain is golden like Chinese silk.

Some Acāryas are of the openion that the causal word 'Mayaṭ' is used as all inclusive sense. Therefore these mountains are not of the particalur colour but their material itself is composed of that metal. That is Himavān mountain is of gold and Mahāhimavān is of Silver.

पर्वतों की अन्य विशेषताएँ
Other Specialities of Mountains

मणिविचित्रपार्श्वा उपरि मूले च तुल्यविस्तारा: ।।१३।।

(मणि-विचित्र-पार्श्वाः उपरि मूले च तुल्य-विस्ताराः।)

Maṇivicitrapārśvā Upari Mūle Ca Tulyavistārāḥ. (13)

शब्दार्थ : **मणिविचित्रपार्श्वाः –** (इन पर्वतों के) पार्श्व (भाग) नाना मणियों से रचित; **उपरि मूले च –** ऊपर, मूल और मध्य में; **तुल्यविस्तारा: –** समान विस्तार वाले हैं।

Meaning of Words : **Maṇivicitrapārśvāḥ -** sides (of these mountains) are studded with various jewells; **Upari Mūle Ca -** upper, foot and central part; **Tulyavistārāḥ -** of equal extent.

सूत्रार्थ : इन पर्वतों के पार्श्व भाग नाना प्रकार की मणियों से खचित हैं तथा वे ऊपर, मध्य और मूल में समान ही विस्तार वाले हैं।

English Rendering : These mountain sides are studded with different kinds of jewel and they are of equal width at the top, middle and bottom.

टीका : ये सभी पर्वत अनादिकाल से नाना प्रकार की मणियों से खचित हैं और इनके मूल, मध्य और ऊपरी भाग एक जैसे ही विस्तारवाले हैं।

Comments : All these mountains are studded with different kinds of gems since immemorial times and have identical width at the base, middle and top.

पर्वतों पर स्थित सरोवर
Lakes on the Mountains

पद्ममहापद्मतिगिञ्छकेसरिमहापुण्डरीकपुण्डरीका ह्रदास्तेषामुपरि ।।१४।।

(पद्म-महापद्म-तिगिञ्छ-केसरि-महापुण्डरीक-पुण्डरीकाः ह्रदाः तेषाम् उपरि।)

Padmamahāpadmatigiñchakesarimahāpuṇḍarīka-puṇḍarīkā Hradāsteṣāmupari. (14)

शब्दार्थ : **पद्ममहापद्मतिगिञ्छकेसरिमहापुण्डरीकपुण्डरीकाः –** पद्म, महापद्म, तिगिञ्छ, केसरी, महापुण्डरीक, पुण्डरीक; **ह्रदास्तेषामुपरि –** उन पर्वतों के ऊपर (क्रमशः इन्हीं नाम के) सरोवर (हैं)।

Meaning of Words : **Padmamahāpadmatigiñchakesarimahāpuṇḍarīkapuṇḍarīkāḥ -** Padma, Mahāpadma, Tigiñcha, Kesarī, Mahāpuṇḍarīka, Puṇḍarīka; **Hradāsteṣāmupari -** lakes (are) on the top of these mountains (having respective names).

सूत्रार्थ : इन पर्वतों के ऊपर क्रमशः पद्म, महापद्म, तिगिञ्छ, केसरी, महापुण्डरीक तथा पुण्डरीक नाम के सरोवर हैं।

English Rendering : On the top of each of these mountains, there exist lakes having respective names as Padma, Mahāpadma, Tigiñcha, Kesarī, Mahāpuṇḍarīka and Puṇḍarīka.

टीका : इन छह पर्वतों पर क्रमशः एक-एक सरोवर है। हिमवान् पर्वत के ऊपर पद्म, महाहिमवान् पर्वत के ऊपर महापद्म, निषध पर्वत के ऊपर तिगिञ्छ, नील पर्वत पर केसरी, रुक्मी पर्वत पर महापुण्डरीक और शिखरी पर्वत पर पुण्डरीक सरोवर हैं।

Comments : There exists one lake on the top of each of the six mountains respectively. Padma lake exists on the top of Himavān mountain. Mahāpadma on the top of Mahāhimavān, Tigiñcha on the top of Niṣadha, Kesari on the top of Nīla mountain, Mahāpuṇḍarīka on the top of Rukmī mountain and Puṇḍarīka lake on the top of Śikharī mountain.

सरोवर का विस्तार
Extent of Lake

प्रथमो योजनसहस्रायामस्तदर्द्धविष्कम्भो ह्रदः ।।१५।।

(प्रथमः योजन-सहस्र-आयामः तत्-अर्द्ध-विष्कम्भः ह्रदः।)

Prathamo Yojanasahasrāyāmastadarddhaviṣkambho Hradaḥ.(15)

शब्दार्थ : **प्रथमः –** पहला; **योजनसहस्रायामः –** एक हजार योजन विस्तार (लम्बाई); **तदर्द्धविष्कम्भः –** उससे आधा चौड़ाई वाला (अर्थात् पाँच सौ योजन); **ह्रदः –** सरोवर।

Meaning of Words : **Prathamaḥ -** first; **Yojanasahasrāyāmaḥ -** one thousand Yojana in length; **Tadarddhaviṣkambhaḥ -** half of that (i.e. five hundred Yojana) in width; **Hradaḥ -** lake.

सूत्रार्थ : पहला सरोवर एक हजार योजन लम्बा और पाँच सौ योजन चौड़ा है।

English Rendering : The first lake is one thousand Yojana in length and five hundred Yojana in width.

टीका : पद्म सरोवर पूर्व-पश्चिम दिशा में एक हजार योजन लम्बा और उत्तर-दक्षिण दिशा में पाँच सौ योजन चौड़ा है। इसका तलभाग वज्र से बना हुआ है और तट मणियों और सोने से चित्रित हैं।

Comments : Padma lake is one thousand Yojana in length in east-west direction and five hundred Yojana in width in north-south direction. Its bottom portion is made of admantine and banks are made of gold studded with gems.

सरोवर की गहराई
Depth of Lake

दशयोजनावगाहः ।।१६।।

(दश-योजन-अवगाहः।)

Daśayojanāvagāhaḥ. (16)

शब्दार्थ : **दशयोजन** – (एवं) दस योजन; **अवगाहः** – गहरा।

Meaning of Words : **Daśayojana -** (and) ten Yojana; **Avagāhaḥ -** depth.

सूत्रार्थ : (पहला पद्म सरोवर) दस योजन गहरा है।

English Rendering : (First lake Padma) is ten Yojana in depth.

टीका : पहला पद्म सरोवर एक हजार योजन लम्बा, पाँच सौ योजन चौड़ा और दस योजन गहरा है।

Comments : The first lake Padma is one thousand Yojana in length, five hundred Yojana in width and ten Yojana in depth.

सरोवर के मध्य स्थित कमल का स्वरूप
Shape of Lotus Located in the center of Lake

तन्मध्ये योजनं पुष्करम् ।।१७।।
(तत्-मध्ये योजनं पुष्करम्।)

Tanmadhye Yojanaṁ Puṣkaram. (17)

शब्दार्थ : **तन्मध्ये –** उस (प्रथम पद्म सरोवर) के मध्य में; **योजनम् –** एक योजन (विस्तारवाला); **पुष्करम् –** कमल (है)।

Meaning of Words : **Tanmadhye -** at the center of (the first Padma lake); **Yojanam -** one Yojana (in extent); **Puṣkaram -** (is) lotus.

सूत्रार्थ : पहले पद्म सरोवर के मध्य में एक योजन विस्तार वाला कमल है।

English Rendering : At the center of the first Padma lake, there exists a lotus having extent of one Yojana.

टीका : यह कमल पृथिवीकाय है। उस कमल के एक क्रोश/कोस लम्बे पत्ते हैं तथा दो कोस विस्तृत कर्णिका है। यह कमल एक योजन लम्बा-चौड़ा है।

Comments : This lotus is earth bodied. Its petals are one Krośa/Kosa long and its pericarp has an extent of two Krośas/Kosas. This lotus is one Yojana in length & one Yojana in width.

अन्य सरोवर एवं कमलों का विस्तार
Extent of Succeeding Lakes & Lotuses

तद्द्विगुणद्विगुणा ह्रदाः पुष्कराणि च ।।१८।।
(तत्-द्विगुण-द्विगुणाः ह्रदाः पुष्कराणि च।)

Taddviguṇadviguṇā Hradāḥ Puṣkarāṇi Ca. (18)

शब्दार्थ : **तद्द्विगुणद्विगुणाः –** उस (प्रथम सरोवर और कमल) से दूने-दूने (विस्तार - लम्बाई, चौड़ाई और गहराई वाले); **ह्रदाः –** सरोवर; **पुष्कराणि च –** और कमल (हैं)।

Meaning of Words : **Taddviguṇadviguṇāḥ -** each is double of the previous ones (lake and lotus); **Hradāḥ -** lake; **Puṣkarāṇi Ca -** and lotus.

सूत्रार्थ : प्रथम हिमवान् पर्वत पर स्थित पद्म सरोवर और उसके कमलों की लम्बाई, चौड़ाई और गहराई से आगे के सरोवरों एवं कमलों की लम्बाई, चौड़ाई और गहराई क्रमशः दूनी-दूनी है।

English Rendering : Succeeding lakes and lotuses are double in extent i.e. length, width and depth of the preceeding ones, starting the first Padma lake and one lotus located on first Himavān mountain.

टीका : यद्यपि इस सूत्र में आगे के सरोवरों और कमलों की लम्बाई, चौड़ाई और गहराई उनसे पहले के सरोवरों और कमलों की अपेक्षा दूनी-दूनी बतायी गई है; लेकिन यह पहले तीन सरोवरों - पद्म, महापद्म और तिगिञ्छ स्थित सरोवरों और कमलों के लिए ही है, क्योंकि भौगोलिक रचना दक्षिण के समान मेरु की उत्तर दिशा में समान ही बताई गई है। अतः तिगिञ्छ सरोवर और उसमें स्थित कमल की लम्बाई, चौड़ाई एवं गहराई के समान ही केसरी सरोवर और कमल का विस्तार है। इसी प्रकार महापुण्डरीक और पुण्डरीक सरोवरों और उनमें स्थित कमलों का विस्तार क्रमशः दूसरे महापद्म सरोवर और पहले पद्म सरोवर और उनमें स्थित कमलों के विस्तार के समान ही है।

Comments : Although according to this Sūtra, the length, width and depth of the succeeding lakes and lotuses are said to be double of their preceeding lakes and lotuses but this is so only up to the first three lakes - Padma, Mahāpadma and Tigiñcha and their lotuses because the physical constitution in the north of Meru mountain is stated to be identical to that in the south. As such the extent of length, width and depth of Kesarī lake and the lotus existing in that is same as that in Tigiñcha

lake and lotus in it. In the same manner, the extent of Puṇḍarīka and Mahāpuṇḍarīka lakes and lotuses is similar to that of Mahāpadma and Padma lakes and the lotuses.

कमलों पर रहने वाली देवियाँ
Nymphs Residing on Lotuses

तन्निवासिन्यो देव्यः श्रीह्रीधृतिकीर्तिबुद्धिलक्ष्म्यः पल्योपमस्थितयः ससामानिकपरिषत्काः ।।१९।।

(तत्-निवासिन्यः देव्यः श्री-ह्री-धृति-कीर्ति-बुद्धि-लक्ष्म्यः
पल्योपम-स्थितयः ससामानिक-परिषत्काः।)

Tannivāsinyo Devyaḥ Śrīhrīdhrtikīṛtibuddhilakṣmyaḥ Palyopamasthitayaḥ Sasāmānikapariṣatkāḥ. (19)

शब्दार्थ : **तन्निवासिन्यो देव्यः** – उन (सरवरों में स्थित कमलों) पर रहने वाली देवियाँ; **श्रीह्रीधृतिकीर्तिबुद्धिलक्ष्म्यः** – श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी; **पल्योपमस्थितयः** – पल्योपम स्थिति वाली; **ससामानिकपरिषत्काः** – सामानिक और पारिषद देवों के साथ।

Meaning of Words : **Tannivāsinyo Devyaḥ -** residing in those (lotuses existing in the lakes) are female deities; **Śrīhrīdhṛtikīrtibuddhilakṣmyaḥ -** Śrī, Hrī, Dhṛti, Kīrti, Buddhi and Lakṣmī; **Palyopamasthitayaḥ -** duration of life as Palyopama; **Sasāmānikapariṣatkāḥ -** Sāmānika and Pāriṣada celestial beings.

सूत्रार्थ : उन सरोवरों में स्थित कमलों पर पल्योपम प्रमाण आयु वाली श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी नामक देवियाँ सामानिक और पारिषद देवों के साथ निवास करती हैं।

English Rendering : The lotuses existing on the lakes are occupied as residences by the female deities named Śrī, Hrī, Dhṛti, Kīrti, Buddhi and Lakṣmī, who have their life span of Palyopama and who reside with Sāmānika and Pāriṣada category celestial beings.

टीका : पद्म सरोवर के कमल पर स्थित प्रासाद में श्री देवी, महापद्म के कमल पर स्थित प्रासाद में ह्री देवी, तिगिञ्छ पद्म के कमल पर स्थित प्रासाद में धृति देवी, केसरी सरोवर के कमल पर स्थित प्रासाद में कीर्ति देवी, महापुण्डरीक सरोवर के कमल पर स्थित प्रासाद में बुद्धि देवी तथा पुण्डरीक सरोवर के कमल पर स्थित प्रासाद में लक्ष्मी देवी निवास करती हैं। इन सबकी आयु एक पल्योपम प्रमाण होती है। श्री, ह्री और धृति ये तीनों देवियाँ अपने-अपने परिवार सहित सौधर्म इन्द्र के साथ सम्बन्ध रखती हैं और उसकी आज्ञा में रहती हैं। बुद्धि, कीर्ति और लक्ष्मी ये तीन देवियाँ सपरिवार ईशान इन्द्र के साथ सम्बन्ध रखती हैं और उसकी आज्ञा पालन में तत्पर रहती हैं।

ये देवियाँ मुख्य कमलवर्ती प्रासादों में निवास करती हैं। उन मुख्य कमलों के जो परिवार कमल हैं, उनमें सामानिक और पारिषद देवों के निवास हैं। ये सभी देवियाँ तीर्थङ्कर की माता की गर्भावस्था के समय उनकी सेवा में रहती हैं।

Comments : Śrīdevī female deity resides in the palace located on the lotus of Padma lake, Hrīdevī female deity in the palace located on the lotus of Mahāpadma, Dhṛtīdevī female deity in the palace located in Tigiñchā lake, Kīrtidevī female deity in the palace located in Kesarī lake, Buddhidevī female deity in the palace located in Mahāpuṇḍarīka lake and Lakṣmīdevī female deity in the palace located in Puṇḍarīka lake. All these have life-span of one Palyopama. Female deities Śrī, Hrī and Dhṛti - all the three live with their families and are related to Saudharma Indra and always remain at his command. Female deities - Buddhi, Kīrti and Lakṣmī stay with their families and are related to Aiśāna Indra and are always ready to follow his command.

These female deities reside in main palaces on the lotuses; the family - lotuses of the main lotuses are used as residences for Sāmānika and Pāriṣada celestial beings. All the female deities are ever at the service of the mother of the Tīrthaṅkara during the period of her conception.

गङ्गासिन्धुरोहिद्रोहितास्याहरिद्धरिकान्तासीतासीतोदानारीनरकान्ता–सुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तोदाः सरितस्तन्मध्यगाः ।।२०।।

(गङ्गा-सिन्धु-रोहित्-रोहितास्या-हरित्-हरिकान्ता-सीता-सीतोदा-नारी-नरकान्ता-सुवर्ण-रूप्य-कूला-रक्ता-रक्तोदाः सरितः तत्-मध्यगाः।)

Gaṅgāsindhurohidrohitāsyāhariddharikāntāsītāsitodānārīnarakāntāsuvarṇarūpyakūlāraktāraktodāḥ Saritastanmadhyagāḥ.(20)

शब्दार्थ : **गङ्गासिन्धुरोहिद्रोहितास्याहरिद्धरिकान्तासीतासीतोदानारीनरकान्तासुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तोदाः –** गङ्गा, सिन्धु, रोहित्, रोहितास्या, हरित्, हरिकान्ता, सीता, सीतोदा, नारी, नरकान्ता, सुवर्णकूला, रूप्यकूला, रक्ता, रक्तोदा; **सरितः –** नदियाँ; **तन्मध्यगाः –** उन (क्षेत्रों) के बीच से बहनेवाली।

Meaning of Words : **Gaṅgāsindhurohidrohitāsyāhariddharikāntāsītāsītodānārīnarakāntāsuvarṇarūpyakūlāraktāraktodāḥ -** Gaṅgā, Sindhu, Rohit, Rohitāsyā, Harit, Harikāntā, Sītā, Sītodā, Nārī, Narakāntā, Suvarṇakūlā, Rūpyakūlā, Raktā, Raktodā; **Saritāḥ -** rivers; **Tanmadhyagāḥ -** flowing in those regions.

सूत्रार्थ : उन क्षेत्रों के बीच से बहनेवाली गङ्गा, सिन्धु, रोहित्, रोहितास्या, हरित्, हरिकान्ता, सीता, सीतोदा, नारी, नरकान्ता, सुवर्णकूला, रूप्यकूला, रक्ता और रक्तोदा नदियाँ हैं।

English Rendering : The Gaṅgā, the Sindhu, the Rohit, the Rohitāsyā, the Harit, the Harikāntā, the Sītā, the Sītodā, the Nārī, the Narakāntā, the Suvarṇakūlā, the Rūpyakūlā, the Raktā and the Raktodā are the rivers flowing across those regions.

टीका : भरत क्षेत्र के मध्य से निकलने वाली नदियाँ गङ्गा-सिन्धु, हैमवत क्षेत्र से रोहित्-रोहितास्या, हरिवर्ष क्षेत्र के मध्य से हरित्-हरिकान्ता, विदेह क्षेत्र के मध्य से सीता-सीतोदा, रम्यक क्षेत्र के मध्य से नारी-नरकान्ता, हैरण्यवत क्षेत्र के मध्य से सुवर्णकूला-रूप्यकूला, ऐरावत क्षेत्र के मध्य से रक्ता-रक्तोदा नदियाँ बहती हैं।

Comments : The Gaṅgā and the Sindhu rivers flow across the centre of the Bharata region, the Rohit and the Rohitāsyā rivers flow across the Haimavata region, the Harit - the Harikāntā rivers flow across the Harivarṣa region, the Sītā-Sītodā rivers flow across the Videha region, the Nārī-Narakāntā across the Ramyaka region, the Suvarṇakūlā-Rūpyakūlā across the Hairaṇyavata region and the Raktā-Raktodā rivers flow across the Airāvata region.

नदियों के बहाव की दिशा
Direction of flow of Remaining Rivers

द्वयोर्द्वयोः पूर्वाः पूर्वगाः ।।२१।।
(द्वयोः-द्वयोः पूर्वाः पूर्वगाः।)
Dvayordvayoḥ Pūrvāḥ Pūrvagāḥ. (21)

शब्दार्थ : **द्वयोर्द्वयोः** – दो-दो (नदियों) में से; **पूर्वाः** – पूर्व-पूर्व की (नदियाँ); **पूर्वगाः** – पूर्व (दिशा) को जाती (हैं)।

Meaning of Words : **Dvayordvayoḥ -** (one in) each pair of rivers; **Pūrvāḥ -** first rivers of the group; **Pūrvagāḥ -** flows in eastern direction.

सूत्रार्थ : दो-दो नदियों में से पहली-पहली नदी पूर्व दिशा की ओर बहती हैं।

English Rendering : First river in each pair of rivers flows in the eastern direction.

टीका : गङ्गा, रोहित्, हरित्, सीता, नारी, सुवर्णकूला और रक्ता नदियाँ पूर्व दिशा में बहकर पूर्व समुद्र में मिलती हैं।

Comments : The rivers Gaṅgā, Rohit, Harit, Sītā, Nārī, Suvarṇakūlā and Raktā, after flowing in eastern direction join the eastern ocean.

शेष नदियों के बहाव की दिशा
Direction of flow of Remaining Rivers

शेषास्त्वपरगाः ।।२२।।
(शेषाः तु-अपरगाः।)
Śeṣāstvaparagāḥ. (22)

शब्दार्थ : **शेषाः तु –** किन्तु शेष (वे नदियाँ); **अपरगाः –** पश्चिम (दिशा को) जाती (हैं)।

Meaning of Words : **Śeṣāḥ Tu -** remaining those (rivers); **Aparagāḥ -** flow in western direction.

सूत्रार्थ : किन्तु शेष नदियाँ पश्चिम दिशा की ओर बहती हैं।

English Rendering : But the remaining rivers flow in western direction.

टीका : सिन्धु, रोहितास्या, हरिकान्ता, सीतोदा, नरकान्ता, रूप्यकूला और रक्तोदा नदियाँ पश्चिम दिशा में बहकर पश्चिम समुद्र में मिलती हैं।

यहाँ यह ध्यान रखना आवश्यक है कि छह पर्वतों के ऊपर छह सरोवर हैं। इन छह सरोवरों से चौदह नदियों का उद्गम होता है, जिसमें से सात नदियाँ पूर्व समुद्र में और सात नदियाँ पश्चिम समुद्र में मिलती हैं। प्रथम पद्म सरोवर से गङ्गा, सिन्धु और रोहितास्या नदियों का उद्गम होता है। दूसरे महापद्म सरोवर से रोहित् और हरिकान्ता, तीसरे तिगिञ्छ सरोवर से हरित् और सीतोदा, चौथे केसरी सरोवर से सीता और नरकान्ता, पाँचवें महापुण्डरीक सरोवर से नारी और रूप्यकूला, छठवें पुण्डरीक सरोवर से सुवर्णकूला, रक्ता और रक्तोदा नदियों का उद्गम होता है।

Comments : The rivers the Sindhu, the Rohitāsyā, the Harikāntā, the Sītodā, the Narakāntā, the Rūpyakūlā and the Raktodā after flowing in western direction join the western oceans.

It is necessarily to be noted here that there are six lakes on the top of six mountains. Fourteen rivers rise from these six lakes. Out of these, seven rivers join the eastern oceans and seven rivers the western oceans. The rivers Gaṅgā, Sindhu and Rohitāsyā rise from the first lake Padma. Rivers Rohit and Harikāntā rise from the second lake Mahāpadma, rivers Harit and Sītodā rise from the third lake Tigiñcha; rivers Sītā and Narakāntā rise from the fourth lake Kesarī; rivers Nārī and Rūpyakūlā rise from the fifth lake Mahāpuṇḍarīka; rivers Suvarṇakūlā, Raktā and Raktodā rise from the sixth lake Puṇḍarīka.

चतुर्दशनदीसहस्रपरिवृता गङ्गासिन्ध्वादयो नद्यः ।।२३।।

(चतुर्दश-नदी-सहस्र-परिवृताः गङ्गा-सिन्धु-आदयः नद्यः।)

Caturdaśanadīsahasraparivṛtā Gaṅgāsindhvādayo Nadyaḥ. (23)

शब्दार्थ : **चतुर्दशनदीसहस्र –** चौदह हजार नदियाँ; **परिवृताः –** वेष्टित; **गङ्गासिन्ध्वादयो नद्यः –** गङ्गा, सिन्धु आदि नदियाँ।

Meaning of Words : **Caturdaśanadīsahasra -** fourteen thousand rivers; **Parivṛtāḥ -** surrounded by; **Gaṅgāsindhvādayo Nadyaḥ -** Gaṅgā, Sindhu etc. rivers.

सूत्रार्थ : गङ्गा, सिन्धु आदि नदियाँ प्रत्येक चौदह हजार (परिवार) नदियों से वेष्टित हैं।

English Rendering : Rivers the Gaṅgā, the Sindhu etc. each has fourteen thousand tributaries.

टीका : गङ्गा, सिन्धु नदियों की चौदह–चौदह हजार परिवार नदियाँ हैं। शेष नदियों – रोहित्–रोहितास्या – अट्ठाईस हजार प्रत्येक; हरित्–हरिकान्ता – छप्पन हजार प्रत्येक; सीता–सीतोदा – एक सौ बारह हजार प्रत्येक; नारी–नरकान्ता – छप्पन हजार प्रत्येक; सुवर्णकूला–रूप्यकूला – अट्ठाईस हजार प्रत्येक और रक्ता–रक्तोदा – चौदह हजार प्रत्येक की सहायक नदियाँ हैं।

Comments : Rivers the Gaṅgā and the Sindhu each has fourteen thousand tributaries. The remaining rivers have tributaries as follows - the Rohit - the Rohitāsyā - twenty-eight thousand each; the Harit Harikāntā - fifty six thousand each; the Sītā - the Sītodā - one hundred twelve thousand each; the Narī - the Narakāntā - fifty six thousand each; the Suvarṇakūlā - the Rūpyakūlā - twenty-eight thousand each; and the Raktā - the Raktodā - fourteen thousand each.

भरतक्षेत्र का विस्तार

Extent of Bharata Kṣetra

भरतः षड्विंशतिपञ्चयोजनशतविस्तारः

षट् चैकोनविंशतिभागा योजनस्य ।।२४।।

(भरतः षड्विंशति-पञ्च-योजन-शत-विस्तारः षट् च

एकोनविंशति-भागाः योजनस्य।)

Bharataḥ ṣaḍviṁśatipañcayojanaśatavistāraḥ

Śaṭ Caikonaviṁśatibhāgā Yojanasya. (24)

शब्दार्थ : **भरतः –** भरत क्षेत्र; **षड्विंशतिपञ्चयोजनशतविस्तारः –** पाँच सौ छब्बीस योजन विस्तारवाला; **च –** और; **षट् एकोनविंशतिभागाः –** उन्नीस भागों में से छह भाग; **योजनस्य –** एक योजन के।

Meaning of Words : **Bharataḥ -** Bharata Kṣetra; **Ṣaḍviṁśatipañcayojanaśatavistāraḥ -** having extent of five hundred twenty-six Yojana; **Ca -** and; **Ṣaṭ Caikonaviṁśatibhāgāḥ -** six parts out of nineteen parts; **Yojanasya -** of one Yojana.

सूत्रार्थ : भरत क्षेत्र का विस्तार पाँच सौ छब्बीस योजन तथा एक योजन के उन्नीस भागों में से छह भाग अधिक प्रमाण है।

English Rendering : The extent of Bharata Kṣetra is five hundred twenty-six Yojana and six parts out of nineteen parts of one Yojana (i.e. $526\frac{6}{19}$ Yojana).

टीका : यहाँ भरत क्षेत्र के विस्तार का वर्णन है, जो $526\frac{6}{19}$ योजन है। यह इस क्षेत्र की अधिकतम चौड़ाई उत्तर-दक्षिण दिशा की है।

Comments : The extent i.e. the width of Bharata region described here is five thousand twenty-six & six parts out of nineteen parts of one Yojana (i.e. $526\frac{6}{19}$). This maximum width of the region is in north-south direction.

तद्द्विगुणद्विगुणविस्तारा वर्षधरवर्षा विदेहान्ताः ।।२५।।

(तत्-द्विगुण-द्विगुण-विस्ताराः वर्षधर-वर्षाः विदेह-अन्ताः।)

Taddviguṇadviguṇavistārā Varṣadharavarṣā Videhāntāḥ. (25)

शब्दार्थ : **तद्द्विगुणद्विगुणविस्ताराः –** उस (भरत क्षेत्र) से दूने-दूने विस्तार (वाले हैं); **वर्षधर –** पर्वत; **वर्षाः –** क्षेत्र; **विदेहान्ताः –** विदेह (क्षेत्र) पर्यन्त।

Meaning of Words : **Taddviguṇadviguṇavistārāḥ -** double in extent of the preceding one (with respect to Bharata Kṣetra); **Varṣadhara -** mountains; **Varṣāḥ -** regions; **Videhāntāḥ -** up to Videha (region).

सूत्रार्थ : भरत क्षेत्र के विस्तार से आगे के विदेह क्षेत्र पर्यन्त के पर्वत और क्षेत्र दूने-दूने विस्तारवाले हैं।

English Rendering : Up to Videha Kṣetra, the mountains and regions are double in their extent than the preceding one starting with that of Bharata Kṣetra.

टीका : आगे-आगे के पर्वत और क्षेत्रों का विस्तार भरत क्षेत्र के विस्तार से क्रमशः दूना-दूना है। लेकिन यह क्रम विदेह क्षेत्र पर्यन्त ही है। विदेह क्षेत्र से आगे उत्तर के पर्वतों और क्षेत्रों का विस्तार विदेह क्षेत्र के विस्तार से आधा-आधा होता गया है।

भरत क्षेत्र के विस्तार ($526\frac{6}{19}$ योजन) से हिमवान् पर्वत का विस्तार दूना ($1052\frac{12}{19}$ योजन) है। हिमवान् पर्वत के विस्तार से हैमवत क्षेत्र का विस्तार दूना ($2105\frac{5}{19}$ योजन) है। हैमवत क्षेत्र से महाहिमवान् पर्वत का विस्तार दूना ($4210\frac{10}{19}$ योजन), महाहिमवान् पर्वत से हरिवर्ष क्षेत्र का विस्तार दूना ($8421\frac{1}{19}$ योजन), हरिवर्ष क्षेत्र से निषध पर्वत का विस्तार दूना ($16842\frac{2}{19}$ योजन) तथा निषध पर्वत से विदेह क्षेत्र का विस्तार दूना ($33684\frac{4}{19}$ योजन) क्रमशः दुगना है। विदेह के विस्तार से नील पर्वत का

विस्तार आधा है, नील पर्वत के विस्तार से रम्यक क्षेत्र का विस्तार, रम्यक क्षेत्र से रुक्मी पर्वत, रुक्मी पर्वत से हैरण्यवत क्षेत्र, हैरण्यवत क्षेत्र से शिखरी पर्वत तथा शिखरी पर्वत से ऐरावत क्षेत्र का विस्तार क्रमशः आधा-आधा है।

Comments : The extent of the succeeding mountains and continents is double & double that of Bharata region and so on. But this sequence continues only up to Videha region. The extent of the mountains and continents in the north of Videha region is half-half of the succeeding ones from that of Videha region and thereafter.

The extent of Himavān mountain ($1052\frac{12}{19}$ Yojana) is double of the extent of Bharata region ($526\frac{6}{19}$ Yojana). The extent of Haimavata region ($2105\frac{5}{19}$ Yojana) is double of the extent of Himavān mountain. The extent of Mahāhimavān mountain ($4210\frac{10}{19}$ Yojana) is double of Haimavata region; the extent of Harivarṣa region ($8421\frac{1}{19}$ Yojana) is double of the extent of Mahāhimavān mountain; the extent of Niṣadha mountain ($16842\frac{2}{19}$ Yojana) is double of Harivarṣa region and the extent of Videha region is ($33684\frac{4}{19}$ Yojana) is double of the extent of Niṣadha mountain. The extent of Nīla mountain is half of the extent of Videha region; the extent of Ramyaka region compared to the extent of Nīla mountain, extent of Rukmī mountain compared to the extent of Ramyaka region, extent of Hairaṇyavata region compared to the extent of Rukmī mountain, extent of Sikharī mountain compared to the Hairaṇyavata region and extent of Airāvata region compared to the extent of Śikharī mountain is half-half respectively.

उत्तर एवं दक्षिण के क्षेत्र और पर्वतों की समानता
Similarity of North & South Regions & Mountains

उत्तरा दक्षिणतुल्याः ।।२६।।

(उत्तराः दक्षिण-तुल्याः।)

Uttarā Dakṣiṇatulyāḥ. (26)

शब्दार्थ : **उत्तराः** – उत्तर के (क्षेत्र और पर्वतों का विस्तार); **दक्षिणतुल्याः** – दक्षिण के तुल्य हैं।

Meaning of Words : **Uttarāḥ -** northern (regions and mountains); **Dakṣiṇatulyāḥ -** equal in extent to the southern ones.

सूत्रार्थ : उत्तर के क्षेत्रों एवं पर्वतों का विस्तार दक्षिण के क्षेत्रों एवं पर्वतों के विस्तार के तुल्य है। यहाँ सुमेरु पर्वत की अपेक्षा उत्तर और दक्षिण कहे गये हैं।

English Rendering : The extent of regions and mountains in the north of Sumeru Parvata are identical to that of southern regions and mountains.

टीका : इस सूत्र से निषध पर्वत और नील पर्वत, हरि क्षेत्र और रम्यक क्षेत्र, महाहिमवान् और रुक्मी पर्वत, हैमवत और हैरण्यवत क्षेत्र, हिमवान् पर्वत और शिखरी पर्वत तथा भरत क्षेत्र और ऐरावत क्षेत्रों के समान विस्तार का कथन है। इससे इन पर्वतों पर स्थित सरोवरों और उनमें स्थित कमलों आदि की समानता भी लगा लेनी चाहिए।

Comments : This Sūtra states that the extent of Niṣadha and Nīla mountains, Hari and Ramyaka regions, Mahāhimavān and Rukmī mountains, Haimavata & Hairaṇyavata regions, Himavān and Śikharī mountains and Bharata and Airāvata regions is of the same magnitude. From this it should also be inferred that the extent of lakes and lotuses located therein are also of the same magnitude.

भरत और ऐरावत क्षेत्रों में वृद्धि-ह्रास
Rise and Fall in Bharata & Airāvata Regions

भरतैरावतयोर्वृद्धिह्रासौ षट्समयाभ्यामुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभ्याम् ।।२७।।

(भरत-ऐरावतयोः वृद्धि-ह्रासौ षट्-समयाभ्याम्-उत्सर्पिणी-अवसर्पिणीभ्याम्।)

Bharatairāvatayorvṛddhihrāsau

Ṣaṭsamayābhyāmutsarpiṇyavasarpiṇībhyām. (27)

शब्दार्थ : भरतैरावतयोः – भरत-ऐरावत (क्षेत्र) में; **वृद्धिह्रासौ –** वृद्धि-ह्रास; **षट्समयाभ्यामुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभ्याम् –** उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी के छह समयों की (अपेक्षा)।

Meaning of Words : **Bharatairāvatayoḥ -** in the Bharata and Airāvata regions; **Vṛddhihrāsau -** rise and fall; **Ṣaṭsamayābhyāmut-sarpiṇyavasarpiṇībhyām -** in each of six ages of Utsarpiṇī and Avasarpiṇī aeons.

सूत्रार्थ : भरत और ऐरावत क्षेत्रों में उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी के छह-छह कालों में (मनुष्यों की आयु आदि में) वृद्धि और ह्रास होता है।

English Rendering : In Bharata and Airāvata regions, (the rise and fall of age etc. of human beings) take place in the six periods of Utsarpiṇī and Avasarpiṇī aeons.

टीका : भरत और ऐरावत क्षेत्र में छह-छह खण्ड हैं, जिनमें एक-एक आर्य खण्ड और पाँच-पाँच म्लेच्छ खण्ड हैं। मात्र इन आर्य खण्डों में रहने वाले मनुष्यों में वृद्धि और ह्रास होता है। भरत-ऐरावत सम्बन्धी मनुष्यों में भोग, उपभोग, अनुभव, सम्पदा, आयु, प्रमाणरूप शरीर की ऊँचाई आदि में वृद्धि और ह्रास होता है।

सुख-दुःख के उपयोग को अनुभव कहते हैं। जीवित रहने के परिमाण को आयु कहते हैं। शरीर की ऊँचाई को प्रमाण कहते हैं। जिस काल में अनुभव, आयु आदि की वृद्धि होती है वह उत्सर्पिणी काल है, और जिसमें इनका ह्रास होता है वह अवसर्पिणी काल है।

अवसर्पिणी के छह भेद हैं - सुषम-सुषमा (प्रथम काल), सुषमा (द्वितीय काल), सुषम-दुष्षमा (तृतीय काल), दुष्षम-सुषमा (चतुर्थ काल), दुष्षमा (पञ्चम काल) और अति दुष्षम (दुष्षम-दुष्षमा) रूप (छठवाँ काल)। इसी प्रकार उत्सर्पिणी के भी छह भेद हैं ह्न अतिदुष्षमा (दुष्षम-दुष्षमा), दुष्षमा, दुष्षम-सुषमा, सुषम-दुष्षमा, सुषमा और सुषम-सुषमा।

दस कोड़ाकोड़ी सागरोपम का एक अवसर्पिणी काल और दस कोड़ाकोड़ी सागरोपम का ही एक उत्सर्पिणी काल होता है। बीस कोड़ाकोड़ी सागरोपम का एक कल्पकाल होता है।

सुषम-सुषमा काल चार कोड़ाकोड़ी सागरोपम का है। सुषमा काल तीन कोड़ा-कोड़ी सागरोपम का, सुषम-दुष्षमा दो कोड़ाकोड़ी सागरोपम का, दुष्षम-सुषमा काल

बयालीस हजार कम एक कोड़ाकोड़ी सागरोपम का है और दुष्षमा काल इक्कीस हजार वर्ष का और अतिदुष्षमा रूप दुष्षमा-दुष्षमा काल भी इक्कीस हजार वर्ष का है। इसी प्रकार उत्सर्पिणी में इसके विपरीत क्रम से जानना चाहिए।

सुषम-सुषमा काल की शुरुआत में मनुष्यों के शरीर की ऊँचाई छह हजार धनुष और आयु तीन पल्योपम होती है और यह उत्तम भोगभूमि का काल उत्तरकुरुवत् होता है। सुषमा काल के प्रारम्भ में मनुष्यों के शरीर की ऊँचाई चार हजार धनुष और आयु दो पल्योपम होती है। यह मध्यम भोगभूमि का काल हरिवर्षवत् होता है। सुषम-दुष्षमा काल के प्रारम्भ में मनुष्यों के शरीर की ऊँचाई दो हजार धनुष और आयु एक पल्योपम होती है। यह जघन्य भोगभूमि का काल हैमवत वर्ष के समान होता है। दुष्षम-सुषमा काल की शुरुआत में मनुष्यों के शरीर की अधिकतम ऊँचाई पाँच सौ धनुष और आयु एक पूर्व-कोटि होती है। इस काल में चौबीस तीर्थङ्कर, बारह चक्रवर्ती, नौ नारायण (वासुदेव) और नौ प्रतिनारायण (प्रति वासुदेव), नौ बलभद्र - ये त्रेषठ 'शलाका पुरुष' पैदा होते हैं। इसी काल में चौबीस तीर्थङ्करों के माता-पिता, चौबीस कामदेव, ग्यारह रुद्र, नौ नारद, चौदह कुलकर रूप त्रेसठ शलाका पुरुष और शेष एक सौ छह अर्थात् कुल एक सौ उन्नहत्तर (169) 'महापुरुष' उत्पन्न होते हैं। दुष्षमा नामक पञ्चम काल के आदि में मनुष्यों की आयु एक सौ बीस वर्ष और शरीर की ऊँचाई सात हाथ होती है तथा अन्त में आयु बीस वर्ष और शरीर की ऊँचाई साढ़े तीन हाथ रह जाती है। इस काल में संयम गुण से विशिष्ट मनुष्यों के अभाव के कारण चारण ऋद्धिधारी मुनि, वैमानिक देव और विद्याधर यहाँ नहीं आते हैं। बहुत से व्यक्ति चारित्र को छोड़ देते हैं।

अतिदुष्षमा (दुष्षम-दुष्षमा) छठवें काल के आदि में मनुष्यों की आयु बीस वर्ष और अन्त में सोलह वर्ष होती है। शरीर की ऊँचाई साढ़े तीन हाथ से घटकर केवल एक हाथ रह जाती है। इस काल के मनुष्य पशुओं जैसा आचरण करने वाले, क्रूर, बहरे, अन्धे, काने, गूँगे, दरिद्री, क्रोधी, पापी आदि स्वभाव वाले होते हैं।

असंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी काल बीत जाने पर एक 'हुण्डावसर्पिणी' काल आता है। इस काल में अनहोनी बातें होती हैं; यथा तृतीय काल में कुलकर व तीर्थङ्कर की उत्पत्ति, तृतीय काल में मुक्ति, तीर्थङ्करों पर उपसर्ग, चक्रवर्ती का मान भङ्ग आदि।

छठे काल अतिदुष्षमा यानी दुष्षम-दुष्षमा काल के अन्त में प्रलयकाल आता है। प्रलयकाल में सरस, विरस, तीक्ष्ण, रूक्ष, उष्ण, विष और क्षार मेघ क्रम से सात-

सात दिन बरसते हैं। इस प्रकार उन्नचास दिन (49) तक यह वर्षा होती रहती है। सम्पूर्ण आर्य खण्ड में प्रलय होने पर मनुष्यों के बहत्तर युगल अथवा अनेक मनुष्य और तिर्यञ्च शेष रह जाते हैं। ये विजयार्द्ध की गुफा में दयार्द्र देवों और विद्याधरों द्वारा ले जाये जाते हैं।

इन उन्नचास दिनों में गम्भीर गर्जना सहित क्षार जल और विष जल में से प्रत्येक को सात-सात दिन तक बरसाते हैं। इसके अतिरिक्त मेघों के वे समूह धूम, धूलि, वज्र एवं जलते हुए दुष्प्रेक्ष्य ज्वाला समूह; इनमें से प्रत्येक को सात-सात दिन पर्यन्त बरसाते हैं। इससे भरत क्षेत्र के अन्तर्गत आर्यखण्ड की चित्रा पृथिवी के ऊपर स्थित एक योजन की भूमि जलकर नष्ट हो जाती है। उस समय आर्यखण्ड शेष भूमियों के समान दर्पण तल के सदृश्य कान्ति से युक्त, धूलि और कीचड़ आदि की कलुषिता से रहित हो जाता है। पृथिवी समतल हो जाती है। इस प्रकार दस कोड़ाकोड़ी सागरोपम प्रमाण अवसर्पिणी काल समाप्त हो जाता है।

इस प्रलय के बाद दस कोड़ाकोड़ी सागरोपम प्रमाण उत्सर्पिणी काल प्रारम्भ होता है। उसमें सर्वप्रथम अतिदुष्षमा यानी दुष्षम-दुष्षमा नामक काल रहता है। इसके प्रारम्भ में सात दिन पर्यन्त रात-दिन क्षीर मेघ और उसके बाद सात दिन अमृत मेघ बरसते हैं। उसके बाद सात-सात दिन तक उष्ण, रुक्ष, तीक्ष्ण, विरस और सरस वर्षा होती है। उन मेघों के प्रभाव से औषधि, वृक्ष, गुल्म, तृण आदि सरस हो जाते हैं। अवसर्पिणी के अन्त समय में जो युगल या अनेक मनुष्य व तिर्यञ्च विजयार्द्ध की गुफा में प्रविष्ट हुए थे, वे गुफा से निकलकर सरस औषधि और धान्य आदि का सेवन कर अपने जीवन को सहर्ष व्यतीत करते हैं।

Comments : Each of Bharata and Airāvata regions consists of six divisions each comprising of one Āryakhaṇḍa (country inhabited by Ārayan) and five Mlecchakhaṇḍas. (a country inhabited by non-Ārayan or barbarians) Only the human beings residing in these Āryakhaṇḍas experience rise & fall. These human beings experience rise & fall i.e. increase and decrease with regard to their enjoyments, knowledge, wealth, age, stature of body extent etc.

Feeling of pleasure and pain is termed as 'Anubhava'. 'Āyu' is duration of life. 'Pramāṇa' is height of body. The period in which there is a gradual increase in feelings of pleasure, age etc. is called 'Utsarpiṇī Kāla' i.e. ascending cycle and wherein there is decrease in these is known as 'Avasarpiṇī Kāla' i.e. descending cycle.

'Avasarpiṇī Kāla' or descending cycle is of six divisions - 'Suṣama-Suṣamā' (first period), 'Suṣamā' (second period), 'Suṣama-Duṣṣamā' (third period), 'Duṣṣama-Suṣamā' (fourth period), 'Duṣṣamā' (fifth period) and 'Atiduṣṣamā' or 'Duṣṣama-Duṣṣamā' (sixth period). Likewise 'Utsarpiṇī' is also of six divisions - 'Atiduṣṣamā' (Duṣṣama - Duṣṣamā), 'Duṣṣamā', 'Duṣṣamā - Suṣamā', 'Suṣama - Duṣṣamā', 'Suṣamā' and 'Suṣama-Suṣamā'.

One 'Avasarpiṇī Kāla' (descending cycle) is of ten Koḍākoḍī Sāgaropama. Similarly one 'Utsarpiṇī Kāla' (ascending cycle) is also of ten Koḍākoḍī Sāgaropama.

Suṣama-Suṣamā Kāla is of four Koḍākoḍī Sāgaropama; Suṣamā Kāla is of three Koḍākoḍī Sāgaropama, Suṣama-Duṣṣamā Kāla is of two Koḍākoḍī Sāgaropama, Duṣṣama-Suṣamā Kāla is of one Koḍākoḍī Sāgaropama less forty-two thousand years and Duṣama Kāla is of twenty-one thousand years and Duṣṣama-Duṣamā Kāla is also of twenty-one thousand years. Similarly Utsarpiṇī Kāla (ascending cycle) should be understood in the reverse order.

In the Suṣama-Suṣamā Kāla, the body height of human beings is six thousand Dhanuṣa and age three Palyopama. This superior pleasure-land period is similar to that prevailing in Uttarakuru. In Suṣamā Kāla, the body height of human beings is four thousand Dhanuṣa (bows) and age of two Palyopamas. This medium pleasure-land period is similar to that prevailing in Harivarṣa region. In Suṣama-Duṣṣamā Kāla, the body height of human beings is two thousand Dhanuṣa and the age of one Palyopama. This inferior pleasure-land period is similar to that prevailing in Haimavatavarṣa. In Duṣṣama-Suṣamā Kāla, the maximum body height of human beings is five hundred Dhanuṣa and the age of one Pūrva-Koṭi. In this period noble personalities i.e. sixty-three 'Śalākā Puruṣas' comprising of twenty-four Tīrthaṅkaras, twelve Cakravartīs, nine Nārāyaṇas (Vāsudeva), nine Pratinārāyaṇas (Prati-Vāsudeva) and nine Balabhadras are born. In this period, also are born the parents of twenty-four Tīrthaṅkaras, twenty-four Kāmadevas, eleven Rudras, nine Nāradas and fourteen Kulakaras - in all one hundred & six great personalities. Adding sixty-three, 'Śalākā Puruṣas' total Great

Personages are one hundred and sixty-nine (169). In Duṣṣamā - the fifth period, in the beginning of the period, the age of human beings is one hundred & twenty years and body height of seven cubits but in the end of the period, the age is only twenty years and body height is three & half cubits. Due to absence of righteous persons having austerities in this period, erudite monks, celestial beings and Vidyādharas do not visit here. Many persons abandon their right conduct.

In the beginning of the sixth period - the Duṣṣama-Duṣṣamā, the age of human beings is twenty years which reduces to sixteen years at the end of the period. The body height is reduced to one cubit from three & half cubits. In this period, behaviour of human beings is like that of animals and they are crual, dumb, deaf, blind, one eyed, poor, angry, indulgent in sinful activities etc.

After innumerable ascending-descending cycles, there occurs one 'Huṇḍāvasarpiṇī Kāla'. In this period, unexpected events take place. For example, birth of Kulakaras and Tīrthaṅkaras in third period, salvation in third period, infliction of calamities on Tīrthaṅkaras, hurting of the pride of Cakravartī etc.

At the end of sixth period, Duṣṣama-Duṣṣamā, the catastrophe takes place. In this catastrophe-period, tasty, tasteless, severe, dry, hot, poisonous and alkaline rains occur each for seven days in that order. In this way the rainfall continues for forty-nine days. During catastrophe in the entire Āryakhaṇḍa, seventy-two couples of humans or many other humans and Tiryañcas survive. These are all taken inside the caves of Vijayārddha mountain by the compassionate celestial beings and Vidyādharas.

During these fortynine days, alkaline and poisoneous rainfall occurs each for seven days with extreme thunder. In addition, there occurs rainfall accompanied with smoke, dust, admant and fire with lightening mass etc. each for seven days. As a result, one Yojana thick earth layer of Citrā Pṛthivī of Āryakhaṇḍa in Bharata region gets destroyed by burning. At that time, Āryakhaṇḍa like other lands become lustrous like a mirror devoid of the dirt of dust & mud etc. The land becomes evenly levelled. In this way, the descending cycle of ten Koḍākoḍī Sāgaropama comes to an end.

At the end of this catastrophe, ascending cycle of ten Koḍ़ākoḍ़ī Sāgaropama commences. First of all, there is first period of Duṣṣama-Duṣṣamā. In the beginning of this period, for first seven days, day & night there is milk-rainfall and thereafter for next seven days, there is nectar-rainfall. After that for seven days each, there is a rainfall accompanied with heat, dryness, severity, tasteless and tasteful. Due to these kinds of rainfall, medicinal plants, trees, creepers, grass etc. receive the required matter particles for their growth. The couples of humans & Tiryañcas who had taken shelter in the caves of Vijayārddha mountain at the end of descending cycle come out and live comfortably using medicines, grains etc.

अन्य क्षेत्रों में काल परिवर्तन नहीं
No cyclic changes in other Regions

ताभ्यामपरा भूमयोऽवस्थिताः ।।२८।।

(ताभ्यां अपराः भूमयः अवस्थिताः।)

Tābhyāmaparā Bhūmayo(a)vasthitāḥ. (28)

शब्दार्थ : **ताभ्याम् –** उन (भरत और ऐरावत क्षेत्रों) से; **अपराः –** भिन्न; **भूमयोऽवस्थिताः –** भूमियाँ अवस्थित (हैं)।

Meaning of Words : **Tābhyām -** from those (Bharata and Airāvata regions); **Aparāḥ -** other than; **Bhūmayo(a)vasthitāḥ -** are stable.

सूत्रार्थ : भरत और ऐरावत क्षेत्रों से भिन्न अन्य भूमियों में षट्कालगत परिवर्तन नहीं होता। अर्थात् वे सदा एक-सी बनी रहती हैं।

English Rendering : In other than Bharata and Airāvata regions, there is no ascending & descending cyclic changes. That is, they always remain stable.

टीका : भरत-ऐरावत को छोड़कर शेष हैमवत क्षेत्र, हरि क्षेत्र एवं देवकुरु नामक तीन भूमियाँ अवस्थित हैं। उनमें सदा कोई एक काल ही रहता है। जैसे हैमवत क्षेत्र में सदा तृतीय काल रहता है। हरि क्षेत्र में दूसरा काल और देवकुरु में प्रथम काल रहता है। यद्यपि इनमें अवसर्पिणी काल के सदृश काल रहता है, तथापि वहाँ पर उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी काल नहीं है।

भरत और ऐरावत क्षेत्रों के भी छह-छह खण्ड हैं, जिनमें एक-एक आर्य खण्ड और पाँच-पाँच म्लेच्छ खण्ड हैं। षट्काल परिवर्तन केवल कर्मभूमिगत आर्य खण्ड में ही होता है। सूत्र 11 की टीका में 30 भोगभूमियों का संक्षिप्त में उल्लेख है। इन भोगभूमियों में भी काल अपरिवर्तनीय रहता है। इसी प्रकार विदेह क्षेत्र में भी षट्कालगत परिवर्तन नहीं होता। पाँच म्लेच्छ खण्डों एवं विजयार्ध पर्वत पर निवास करने वाले विद्याधरों के क्षेत्र में भी अवसर्पिणी एवं उत्सर्पिणी काल में क्रमशः दुष्षम-सुषमा (चतुर्थ) एवं सुषम-दुष्षमा (तृतीय) काल के प्रारम्भ से अन्त तक हानि-वृद्धि होती रहती है। स्वयम्भूरमण द्वीप और स्वयम्भूरमण समुद्र में हमेशा दुष्षमा काल ही रहता है।

Comments : Other than Bharata-Airāvata regions, in the remaining regions of Haimavata Kṣhetra, Hari Kṣhetra and Devakuru - all pleasure-lands are free from cyclic change and one type of period always contiunes there. For example, in Haimavata region, there is always third period, in Hari Kṣhetra there is always second and in Devakuru there is always first period. Although in these regions, there is change like descending cycle but there is no descending-ascending periodic change.

Each Bharata and Airāvata regions has six divisions consisting of one Āryakhaṇḍa and five Mlecchakhaṇḍas in each region. The change in the form of six periodic cycles takes place only in Āryakhaṇḍa which is an action-land. There is a brief mention of thirty pleasure-lands under the comments of Sūtra 11. In these pleasure-lands also, there is no change of periodic cycle. Similarly there is no change like six-periodic cycles in Videha region also. In the five Mlecchakhaṇḍas and in the region of residence of Vidyādharas on Vijayārddha mountain, there is decrease-increase from beginning to end in accordance with Duṣṣama-

Suṣamā (fourth period) and Suṣamā-Duṣamā (third period) respectively of descending & ascending cycles. In the Svayambhūramaṇa continent and ocean, there is Duṣṣamā Kāla for all times.

भोगभूमि में जीवों की आयु
Age of Beings in Pleasure-Lands

एकद्वित्रिपल्योपमस्थितयो हैमवतकहारिवर्षकदैवकुरवकाः ।।२९।।

(एक-द्वि-त्रि-पल्योपम-स्थितयः हैमवतक-हारिवर्षक-दैवकुरवकाः।)

Ekadvitripalyopamasthitayo Haimavatakahārivarṣaka-daivakuravakāḥ. (29)

शब्दार्थ : **एकद्वित्रिपल्योपमस्थितयः –** एक, दो, तीन पल्योपम आयु; **हैमवतकहारिवर्षकदैवकुरवकाः –** हैमवत, हरिवर्ष और देवकुरु के मनुष्यों (की क्रमशः स्थिति है)।

Meaning of Words : **Ekadvitripalyopamasthitayaḥ -** one, two, three Palyopama age; **Haimavatakahārivarṣakadaiva-kuravakāḥ -** human beings in Haimavata, Harivarṣa and Devakurus (age respectively).

सूत्रार्थ : हैमवत, हरिवर्ष और देवकुरु में रहनेवाले मनुष्य क्रमशः एक, दो और तीन पल्योपम प्रमाण आयु वाले होते हैं।

English Rendering : The age of human beings of Haimavata, Harivarṣa and Devakuru is one, two and three Palyopama, respectively.

टीका : ढाई द्वीप में स्थित पाँच हैमवत क्षेत्रों में सदा सुषम-दुष्षमा काल, आयु एक पल्योपम, ऊँचाई दो हजार धनुष, आहार एक दिन के अन्तराल से और शरीर का रङ्ग नील-कमल के समान होता है।

पाँच हरिवर्ष क्षेत्रों में सदा सुषमा काल, आयु दो पल्योपम, ऊँचाई चार हजार धनुष, आहार दो दिन के अन्तराल से और शरीर का रङ्ग शङ्ख के समान सफेद होता है।

पाँच देवकुरु क्षेत्रों में सदा सुषम-सुषमा काल, आयु तीन पल्योपम, ऊँचाई छह हजार धनुष, आहार तीन दिन के अन्तराल से तथा शरीर का रङ्ग सोने के समान पीला होता है।

Comments : In the five Haimavata regions of the two & half continents where human beings dwell, Suṣama-Duṣṣamā period always prevails. Their age is one Palyopama, body height is two thousand Dhanuṣa (bows), food intake is on alternate days and the colour of body is like blue-lotus.

In the five Harivarṣa regions, Suṣamā period prevails all the time, age of the human beings is two Palyopamas, body height is four thousand Dhanuṣa (bows), food intake is after the lapse of two days and the body colour is white like that of conch-shell.

In the five Devakuru regions, Suṣma-Suṣamā period always prevails. Age of the human beings is three Palyopama, body height is six thousand Dhanuṣa (bows), food-intake is after the lapse of three days and the body colour is yellow like gold.

उत्तर में मनुष्यों की स्थिति
Status of Human Beings of North Region

तथोत्तराः ।।३०।।

(तथा-उत्तराः।)

Tathottarāḥ. (30)

शब्दार्थ : **तथा –** वैसा ही (दक्षिण के समान); **उत्तराः –** उत्तर (में भी है)।

Meaning of Words : **Tathā -** identical (to south); **Uttarāḥ -** in north.

सूत्रार्थ : दक्षिण क्षेत्र के समान उत्तर में भी जानना चाहिए।

English Rendering : The condition (of human habitation) in north is identical to that of south.

टीका : पूर्व सूत्र की टीका में मेरु पर्वत के दक्षिण दिशा में स्थित हैमवत, हरिवर्ष और देवकुरु में स्थित मनुष्यों की आयु आदि का उल्लेख किया गया है। मेरु पर्वत के उत्तर दिशा में हैरण्यवत, रम्यक और उत्तरकुरु में निवास करने वाले मनुष्यों की आयु आदि का वर्णन इस सूत्र में किया जा रहा है।

हैमवत क्षेत्र के समान ही हैरण्यवत क्षेत्र में मनुष्यों की आयु एक पल्योपम, शरीर की ऊँचाई दो हजार धनुष, आहार एक दिन के अन्तराल से और शरीर का रङ्ग नील-कण्ठ के समान होता है।

हरिवर्ष क्षेत्र के समान रम्यक क्षेत्र में आयु दो पल्योपम, शरीर की ऊँचाई चार हजार धनुष, आहार दो दिन के अन्तराल से और शरीर का रङ्ग शङ्ख के समान श्वेत होता है।

देवकुरु के समान उत्तरकुरु में आयु तीन पल्योपम, शरीर की ऊँचाई छह हजार धनुष, आहार तीन दिन के अन्तराल से और शरीर का रङ्ग स्वर्ण-सम पीला होता है।

Comments : The age etc. of the human beings residing in Haimavata, Harivarṣa and Devakuru regions located in the south direction of the mount Meru have been described under the comments of the previous Sūtra. In this Sūtra, description about the age etc. of human beings residing in Hairaṇyavata, Ramyaka and Uttarakuru which are located north of Meru mountain, is being given.

Like Haimavata region, age of human beings residing in Hairaṇyavata region is one Palyopama, body height is two thousand Dhanuṣa, food intake on alternate days and the body colour is blue like the neck of blue-jay.

Like Harivarṣa region, the age of human beings of Ramyaka region is two Palyopamas, body height is four thousand Dhanuṣa, food intake is after the lapse of two days and body colour is white like conch-shell.

Like Devakuru region, the age of human beings of Uttarakuru is three Palyopamas, body height is six thousand Dhanuṣa, food intake is after the lapse of three days and the body colour is yellow like gold.

विदेह क्षेत्रों में मनुष्यों की आयु
Age of Human Beings in Videha Kṣetras

विदेहेषु सङ्ख्येयकालाः ।।३१।।

Videheṣu Saṅkhyeyakālāḥ. (31)

शब्दार्थ : **विदेहेषु –** विदेह क्षेत्रों में (स्थित मनुष्य); **सङ्ख्येयकालाः –** सङ्ख्यात वर्ष की आयु वाले।

Meaning of Words : **Videheṣu -** human beings of Videha regions; **Saṅkhyeyakālāḥ -** of numerable years of age.

सूत्रार्थ : विदेह क्षेत्रों में मनुष्य सङ्ख्यात वर्ष आयु वाले होते हैं।

English Rendering : The age of human beings in Videha regions is of numerable years.

टीका : 'सङ्ख्येयकाल' से उत्कृष्टतः एक पूर्व-कोटि वर्ष लेना चाहिये। चौरासी लाख वर्ष का एक पूर्वाङ्ग और चौरासी लाख पूर्वाङ्ग का एक पूर्व होता है। अतः एक पूर्व-कोटि में संख्या इस प्रकार होगी :-

एक पूर्व-कोटि = चौरासी लाख ह्न चौरासी लाख ह्न एक करोड़। अर्थात् 7056 ह्न 10^{17} वर्ष या 7056 ह्न 10^{10} करोड़ वर्ष होते हैं।

ढाई द्वीप सम्बन्धी पाँचों विदेहों में मनुष्य की आयु संख्यात वर्ष प्रमाण है। उनकी उत्कृष्ट आयु ढाई द्वीप में एक पूर्वकोटि प्रमाण एवं जघन्य आयु अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है। वहाँ के मनुष्यों की उत्कृष्ट अवगाहना पाँच सौ धनुष है और वे नित्य भोजन करते हैं। वहाँ सुषम-दुष्षमा काल (तृतीय काल) के अन्त के समान हमेशा काल बना रहता है।

Comments : 'Saṅkhyeya Kāla' here means the maximum extent of one Pūrvakoṭi years. Eighty-four Lākha years makes one Pūrvāṅga and eighty four Lākha Pūrvāṅga makes one Pūrva. As such one Pūrvakoṭi number works out as :-

One Pūrvakoṭi = Eighty four Lākhas x Eighty four Lākhas x one crore

$= 7056 \times 10^{17}$ or 7056×10^{10} crore years.

The age of human beings in five Videha regions of the two & half continents where human beings dwell is to the extent of numerable years. The maximum age is to the extent of one Pūrvakoṭi years and minimum is one Antarmuhūrta. The maximum body height is five hundred Dhanuṣa and the food intake is daily. There, the period is always similar to Suṣama-Duṣṣamā Kāla end (end of third period of Avasarpiṇī cycle.

भरत क्षेत्र का विस्तार

Extent of Bharata Kṣetra

भरतस्य विष्कम्भो जम्बूद्वीपस्य नवतिशतभागः ।।३२।।

(भरतस्य विष्कम्भः जम्बूद्वीपस्य नवतिशतभागः।)

Bharatasya Viṣkambho Jambūdvīpasya Navatiśatabhāgaḥ. (32)

शब्दार्थ : **भरतस्य –** भरत (क्षेत्र) का; **विष्कम्भः –** विस्तार; **जम्बूद्वीपस्य –** जम्बूद्वीप के; **नवतिशतभागः –** एक सौ नब्बेवाँ भाग (प्रमाण है)।

Meaning of Words : **Bharatasya -** of the Bharata Kṣetra; **Viṣkambhaḥ -** extent; **Jambūdvīpasya -** of Jambūdvipa; **Navatiśatabhāgaḥ -** one part out of one hundred & ninety parts.

सूत्रार्थ : भरत क्षेत्र का विस्तार जम्बूद्वीप के एक सौ नब्बे भागों में से एक भाग प्रमाण है।

English Rendering : The extent of Bharata Kṣetra is one hundred ninetieth part of that of Jambūdvīpa.

टीका : जम्बूद्वीप का विस्तार एक लाख योजन है। उसका एक सौ नब्बेवाँ भाग यानी $526\frac{6}{19}$ योजन भरत क्षेत्र का विस्तार है। यह पूर्व में सूत्र 24 में बताया जा चुका है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि जम्बूद्वीप छह पर्वतों से सात क्षेत्रों में बँटा हुआ है। जम्बूद्वीप के यदि बराबर के एक सौ नब्बे भाग किये जायें, तब उसमें भरत क्षेत्र एक भाग, हिमवान् पर्वत के दो भाग, हैमवत क्षेत्र के चार भाग, महाहिमवान् पर्वत के आठ भाग, हरिवर्ष क्षेत्र के सोलह भाग, निषध पर्वत के बत्तीस भाग, विदेह क्षेत्र के चौंसठ भाग, नील पर्वत के बत्तीस भाग, रम्यक क्षेत्र के सोलह भाग, रुक्मी पर्वत के आठ भाग, हैरण्यवत क्षेत्र के चार भाग, शिखरी पर्वत के दो भाग और ऐरावत क्षेत्र का एक भाग प्रमाण होता है। इन सभी का प्रमाण एक सौ नब्बे होता है।

Comments : The extent (i.e. width) of Jambūdvīpa is one Lākha Yojana. The extent of Bharata region is one part out of one hundred & ninety parts of Jambūdvīpa i.e. $526\frac{6}{19}$ Yojana. This was also stated under comments of Sūtra 24. It may be worth mentioning here that Jambūdvīpa is divided into seven regions by six mountains. If Jambūdvīpa is divided into one hundred & ninety equal parts, then out of that one part is Bharata Kṣetra. Himavān mountain is two parts, Haimavata Kṣetra is four parts, Mahāhimavān mountain eight parts, Harivarṣa Kṣetra is sixteen parts, Niṣadha mountain is thirty-two parts, Videha Kṣetra is sixty-four parts, Nīla mountain is thirty-two parts, Ramyaka Kṣetra is sixteen parts, Rukmī mountain is eight parts, Hairaṇyavata Kṣetra is four parts, Śikharī mountain is two parts and Airāvata Kṣetra is one part. Addition of all these is one hundred & ninety parts.

धातकीखण्ड का विस्तार

Extent of Dhātakīkhaṇḍa

द्विर्धातकीखण्डे ।।३३।।

(द्विः धातकीखण्डे।)

Dvirdhātakīkhaṇḍe. (33)

शब्दार्थ : **द्विः –** दुगने; **धातकीखण्डे –** धातकीखण्ड में।

Meaning of Words : **Dviḥ -** double; **Dhātakīkhaṇḍe -** In Dhātakīkhaṇḍa Dvīpa.

सूत्रार्थ : धातकीखण्ड नामक दूसरे द्वीप में भरत आदि क्षेत्र एवं पर्वत जम्बूद्वीप की अपेक्षा दुगने हैं।

English Rendering : In the second Dvīpa named as Dhātakīkhaṇḍa, extent of regions and mountains of Bharata Kṣetra etc. is double that of Jambūdvīpa.

टीका : धातकीखण्ड की दक्षिण दिशा और उत्तर दिशा में दो इष्वाकार पर्वत हैं। वे दोनों पर्वत इषु यानी बाण की तरह सीधे और दक्षिण से उत्तर तक लम्बे हैं। उनकी लम्बाई द्वीप के बराबर यानी चार लाख योजन है। इसी से वे एक ओर लवणसमुद्र को छूते हैं और दूसरी ओर कालोदधि समुद्र को छूते हैं। उनके कारण धातकीखण्ड के दो भाग हो गये हैं। एक पूर्व भाग और एक पश्चिम भाग। दोनों भागों के बीच एक-एक मेरु पर्वत है और उनके दोनों ओर भरत आदि क्षेत्र और हिमवान् आदि पर्वत हैं। इस तरह वहाँ दो भरत आदि क्षेत्र और दो हिमवान् आदि पर्वत हैं। जैसे गाड़ी के पहिये में जो डण्डे लगे रहते हैं, जिन्हें 'अर' कहते हैं, उनके समान हिमवान् आदि पर्वत हैं। वे पर्वत सर्वत्र समान विस्तार वाले हैं और 'अरों' के बीच में जो खाली स्थान होता है, उसमें भरत आदि क्षेत्र हैं। क्षेत्र कालोदधि समुद्र के पास अधिक चौड़े हैं और लवण समुद्र के पास कम चौड़े हैं। जम्बूद्वीप में जिस स्थान पर जम्बू का पार्थिव वृक्ष है, धातकीखण्ड में उसी स्थान पर धातकी का एक विशाल पार्थिव वृक्ष है। उसके कारण द्वीप का नाम धातकीखण्ड पड़ा है। धातकीखण्ड को घेरे हुए कालोदधि समुद्र है। उसका विस्तार आठ लाख योजन है। कालोदधि को घेरे हुए पुष्करवर द्वीप है। उसका विस्तार सोलह लाख योजन है।

Comments : There are two Iṣvākāra mountains in the north and south of Dhātakīkhaṇḍa. Both the mountains are straight like an arrow and are along the north-south direction. Their length is equal to the length of the continent i.e. four lākha Yojana. Because of this, they touch Lavaṇa ocean on one side and Kālodadhi ocean on the other

side. It has resulted in division of Dhātaḳīkhaṇḍa in to two parts - eastern part and western part. In each of the parts, there exists one Meru mountain in the middle and on both the sides of these mountains exist two-two regions each of Bharata etc. and two-two mountains of Himavān etc. In this way, there are two regions each of Bharata etc. and two mountains each of Himavān etc. It is like a spoke of a wheel known as 'Ara'. Himavān mountain etc. are like these. These mountains are of equal extent every where and space between spokes is occupied by regions like Bharata etc. The regions have greater width close to Kālodadhi ocean and lesser near the Lavaṇa ocean. The large earth bodied Dhātakī tree is existing at the identical location like that of Jambū tree in Jambūdvīpa. Because of this reason, the name of continent is given as Dhātakīkhaṇḍa. Kālodadhi ocean encircles the Dhātakīkhaṇḍa continent. The extent of Kālodadhi ocean is eight lākha Yojana. This ocean is encircled by Puṣkaravaradvīpa which has an extent of sixteen lākhaYojana.

पुष्कर द्वीप का वर्णन
Description of Puṣkara Dvīpa

पुष्करार्द्धे च ।।३४।।

(पुष्कर-अर्द्धे च।)

Puṣkarārddhe Ca. (34)

शब्दार्थ : **पुष्करार्द्धे –** आधे पुष्कर (द्वीप) में; **च –** भी (वैसा ही है अर्थात् दुगने-दुगने हैं)।

Meaning of Words : **Puṣkarārddhe -** in half of Puṣkara Dvīpa; **Ca -** identical extent i.e. double of previous extent.

सूत्रार्थ : आधे पुष्करद्वीप में भी क्षेत्र और पर्वत दुगने-दुगने विस्तार वाले हैं।

English Rendering : In the (first) half of Puṣkara Dvīpa, the extent of regions and mountains is also double (i.e. like that of Dhātakīkhaṇḍa).

टीका : कालोदधि समुद्र को घेरे हुए सोलह लाख योजन विस्तृत पुष्करद्वीप है। इस द्वीप के मध्य में चूड़ी के आकार का एक मानुषोत्तर पर्वत है। इस मानुषोत्तर पर्वत के कारण इस द्वीप के दो भाग हो गये हैं। इसी से आधे पुष्करद्वीप में ही भरत आदि क्षेत्रों की रचना बतलाई है। पुष्करार्ध में भी दक्षिण और उत्तर दिशा में दो इष्वाकार पर्वत हैं जो एक ओर कालोदधि को छूते हैं और दूसरी ओर मानुषोत्तर पर्वत को छूते हैं। इससे द्वीप के दो भाग हो गये हैं – एक पूर्व पुष्करार्द्ध और दूसरा पश्चिम पुष्करार्द्ध। दोनों भागों के बीच एक-एक मेरु पर्वत है और उनके दोनों ओर भरत आदि क्षेत्र एवं हिमवान् आदि पर्वत हैं। जम्बूद्वीप के समान जैसे यहाँ जम्बू वृक्ष है, वैसे वहाँ पुष्कर वृक्ष है। इसलिये इसका नाम पुष्करद्वीप पड़ा है।

Comments : Encircling the Kālodadhi ocean is a broad Puṣkaradvīpa which has the extent of sixteen lākha Yojana. In the centre of this continent is the Mānuṣottara mountain of bangle shape. Because of the location of this mountain, the continent is divided in two parts. Due to this, the existence of Bharata etc. regions has been mentioned only in half continent of Puṣkara Dvīpa. There are two Iṣvākāra mountains in south and north directions in Puṣkarārddha. These mountains touch Kālodadhi ocean on one side and Mānuṣottara on the other side. This has resulted in dividing the continent in two parts - eastern Puṣkarārddha and western Puṣkarārddha. In both the parts, there is one Meru mountain in each and there are regions like Bharata etc. and mountains like Himavān etc. on both the sides. There is Puṣkara tree like Jambū tree in Jambūdvīpa and therefore this continent is named as Puṣkaradvīpa.

मनुष्य लोक

Dwellings of Human Beings

प्राङ् मानुषोत्तरान्मनुष्याः ।।३५।।

(प्राक्-मानुषोत्तरात् मनुष्याः।)

Prāṅ Mānuṣottarānmanuṣyāḥ. (35)

शब्दार्थ : **प्राङ् मानुषोत्तरान् –** मानुषोत्तर पर्वत के पहले तक; **मनुष्याः –** मनुष्य (हैं)।

Meaning of Words : **Prāṅ Mānuṣottarān -** prior to the Mānusottara Parvata; **Manuṣyāḥ -** (are) human beings.

सूत्रार्थ : मानुषोत्तर पर्वत के पहले-पहले मनुष्य रहते हैं।

English Rendering : Human habitation is limited upto the Mānuṣottara Parvata.

टीका : मानुषोत्तर पर्वत से पहले ही मनुष्य पाये जाते हैं। अर्थात् जम्बूद्वीप, धातकीखण्ड और आधे पुष्करद्वीप पर्यन्त, और इनके मध्य दो समुद्रों में यानी पैंतालीस लाख योजन क्षेत्र में मनुष्यों के आवास हैं और वहीं तक उनका आना-जाना होता है। इस ढाई द्वीप के बाहर ऋद्धिधारी मुनिराज या विद्याधर भी नहीं जा सकते। परन्तु केवल तीन अवस्थाओं – १. जो मनुष्य मरकर ढाईद्वीप के बाहर उत्पन्न होने वाले हैं वे यदि मरण के पहले मारणांतिक समुद्घात करें, २. ढाई द्वीप से बाहर रहने वाले जो जीव मनुष्यों में उत्पन्न होते हैं, उनके मनुष्य आयु और मनुष्य गति नामकर्म का उदय होने पर, एवं ३. केवली समुद्घात के समय मनुष्यों का (आत्मप्रदेशों का) अस्तित्व बाहर पाया जाता है।

Comments : Human beings are found up to Mānuṣottara mountain. That is in Jambūdvīpa, Dhātakīkhaṇḍa and up to half of Puṣkaradvīpa and two oceans in between them. It means that human beings dwell only in an area of forty-five lākha Yojana. Even saints bestowed with extraordinary powers or Vidyādharas can not go beyond this two & half continental area, except the three following cases wherein this rule is not applicable and a being is found outside this area - 1. The human being who is to be born after death outside the human region (not, of course, as a human being) effects the exit of the spatial units of his soul beyond the human region, just at the time of transit before his death. 2. The being (not, of course, a human being) living beyond the mountain range of Mānuṣottara, and is to be born as

a human being after death, stays outside the human region until the time of entry into the human region just before death due to rise of human age and human life-course Nāma Kārmas. 3. Kevalī Samudghāta.

मनुष्यों के भेद
Kinds of Human Beings

आर्या म्लेच्छाश्च।।३६।।

(आर्याः म्लेच्छाः च।)

Āryā Mlecchāśca. (36)

शब्दार्थ : **आर्याः –** आर्य; **म्लेच्छाः च –** एवं म्लेच्छ (मनुष्य दो प्रकार के होते हैं)।

Meaning of Words : **Āryāḥ -** Ārya (noble persons); **Mlecchāḥ Ca -** and Mlecchas (non-religious persons) i.e. these are the two kinds of human beings.

सूत्रार्थ : आर्य और म्लेच्छ के भेदवाले दो प्रकार के मनुष्य होते हैं।

English Rendering : Human beings are of two kinds either Āryans i.e. noble persons being virtuous or Mlecchas i.e. non-religious ones being barbarions.

टीका : अढ़ाई द्वीप में ही मनुष्य रहते हैं। मनुष्यों के दो भेद हैं - आर्य और म्लेच्छ। पुण्य क्षेत्र में जन्म लेने वाले, गुण और गुणवानों से जो सेवित हैं, वे आर्य कहलाते हैं। आर्य दो प्रकार के होते हैं - ऋद्धि प्राप्त आर्य और अनृद्धि प्राप्त आर्य। जिनको ऋद्धि प्राप्त हो, वे ऋद्धि प्राप्त आर्य कहलाते हैं। जिन्हें ऋद्धि प्राप्त न हो, वे अनृद्धि प्राप्त आर्य कहलाते हैं। ऋद्धियाँ सात प्रकार की हैं - 1. बुद्धि ऋद्धि; 2. विक्रिया ऋद्धि; 3. तप ऋद्धि; 4. बल ऋद्धि; 5. औषधि ऋद्धि; 6. रस ऋद्धि और 7. अक्षीण ऋद्धि। इनके भी कई उत्तर भेद हैं। अनृद्धि प्राप्त आर्य पाँच प्रकार के हैं - क्षेत्रार्य, जात्यार्य, कर्मार्य, चारित्रार्य और दर्शनार्य।

जो धर्म क्रियाओं से रहित हैं, जिनका आचार, खान-पान आदि असभ्य है या जिनका पाप-क्षेत्र में जन्म हुआ हो, वे म्लेच्छ कहलाते हैं। म्लेच्छ दो प्रकार के होते हैं - अन्तर्द्वीपज म्लेच्छ और कर्मभूमिज म्लेच्छ।

Comments : Human beings dwell only in two & half continents. Human beings are of two types - Ārya and Mleccha. Those who take birth in merit-land and who possess virtues or are respected to by the virtuous ones are called Āryas. Āryas are of two kinds - those with supernatural spiritual attainments and those without such attainments. Those who are bestowed with supernatural powers are called the former ones and those do not have these supernatural attainments are of later category. Supernatural powers are of seven kinds - 1. Buddhi Ṛddhi (extra-ordinary knowledge); 2. Vikriyā Ṛddhi (extra-ordinary power for transformation); 3. Tapa Ṛddhi (extra-ordinary power for observance of hard penance); 4. Bala Ṛddhi (extra-ordinary power related to strength); 5. Auṣadhi Ṛddhi (extra-ordinary power for healing); 6. Rasa Ṛddhi (extra-ordinary power for conversion of ordinary food into delicious dishes) and 7. Akṣiṇa Ṛddhi (extra-ordinary power to ensure inexhaustible food even while feeding any number). These are further sub-divided in several other kinds.

Those Āryas who are without any super natural powers are of five kinds - Kṣhetrārya (based on region), Jātyārya (based on family), Karmārya (based on occupation), Caritrārya (based on conduct) and Darśanārya (based on faith).

Those who are devoid of religious activities and those whose conduct and food-habits are unciviled or those who are born in demerit-land are called Mleccha. Mlecchas are of two kinds - Antardvīpaja Mleccha and Karmabhūmija Mleccha.

कर्मभूमियाँ
Action-Lands

भरतैरावतविदेहाः कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरूत्तरकुरुभ्यः ।।३७।।

(भरत-ऐरावत-विदेहाः कर्म-भूमयः अन्यत्र देवकुरु-उत्तरकुरुभ्यः।)

Bharatairāvatavidehāḥ Karmabhūmayo(a)nyatra Devakurūttarakurubhyaḥ. (37)

शब्दार्थ : **भरतैरावतविदेहाः –** भरत, ऐरावत एवं विदेह क्षेत्र; **कर्मभूमयः –** कर्मभूमियाँ (हैं); **अन्यत्र –** अतिरिक्त; **देवकुरूत्तरकुरुभ्यः –** देवकुरु और उत्तरकुरु (से)।

Meaning of Words : **Bharatairāvatavidehāḥ -** Bharata, Airāvata & Videha (regions); **Karmabhūmayaḥ -** land of actions; **Anyatra -** except or other than; **Devakurūttarakurubhyaḥ -** Devakuru and Uttarakuru.

सूत्रार्थ : देवकुरु और उत्तरकुरु से अतिरिक्त भरत, ऐरावत और विदेह क्षेत्र कर्मभूमियाँ हैं।

English Rendering : Except Devakuru and Uttarakuru Bharata, Airāvata and Videha regions are lands of action.

टीका : ढाई द्वीप में भरत, ऐरावत और विदेह – ये पाँच–पाँच हैं। अतः ये सब पन्द्रह कर्मभूमियाँ हैं। पाँचों मेरु सम्बन्धी पाँच हैमवत, पाँच हरिवर्ष, पाँच हैरण्यवत, पाँच देवकुरु और पाँच उत्तरकुरु – ये तीस भोगभूमियाँ हैं। इनमें से दस उत्कृष्ट, दस मध्यम और दस जघन्य भोगभूमियाँ हैं। इनमें दस प्रकार के कल्पवृक्षों के द्वारा प्राप्त भोगों का प्राधान्य होने से इन्हें 'भोगभूमि' कहते हैं। भरत आदि कर्मभूमि रूप पन्द्रह क्षेत्रों में बड़े से बड़ा पाप कर्म और बड़े से बड़ा पुण्य कर्म अर्जित किया जा सकता है, जिससे जीव मरकर क्रमशः सातवीं पृथिवी और सर्वार्थसिद्धि में भी जा सकता है अथवा मोक्ष भी प्राप्त कर सकता है। इन कर्मभूमिगत क्षेत्रों में षट्कर्मों द्वारा आजीविका की जाती है। इसलिए इनमें षट्कर्मों की प्रधानता होने से इन्हें 'कर्मभूमि' कहते हैं। अथवा कर्मों का क्षय कर मोक्ष प्राप्ति के लिए यहाँ साधन हैं, इसलिये इन्हें कर्मभूमि कहा जाता है।

Comments : The two & half continents comprise of five Bharata, five Airāvata and five Videha regions. As such all these fifteen are action-lands. Five Haimavata, five Harivarṣa, five Hairaṇyavata, five Devakuru and five Uttarakuru - in all thirty are pleasure-lands. Out of these, ten are superior, ten medium and ten inferior pleasure-lands. In these lands, the enjoyment articles/objects are obtained mainly through

Kalpavṛkṣas (wish fulfilling trees); as such these are known as 'Bhogabhūmi' or pleasure-lands. In the action-lands of Bharata etc. encompassing fifteen regions, one can commit greatest demerit or earn greatest merit and may migrate accordingly to take birth either in seventh earth or Sarvārthasiddhi heaven respectively or even attain salvation. In those regions of action-land, the livelihood is attained through six kinds of activities. Therefore, because of the prime importance of these activities in these regions, these are known as Karmabhūmi or action-lands. Or as one can destroy one's bound karmas and attain salvation, it is called action-land.

मनुष्यों की आयु
Age of Human Beings

नृस्थिती परावरे त्रिपल्योपमान्तर्मुहूर्ते ।।३८।।

(नृस्थिती परा-अवरे त्रिपल्योपम-अन्तर्मुहूर्ते।)

Nṛsthitī Parāvare Tripalyopamāntarmuhūrte. (38)

शब्दार्थ : **नृस्थिती परावरे –** मनुष्यों की उत्कृष्ट और जघन्य स्थिति; **त्रिपल्योपमान्तर्मुहूर्ते –** तीन पल्योपम और अन्तर्मुहूर्त (प्रमाण होती है)।

Meaning of Words : **Nṛsthitī Parāvare -** Maximum and Minimum age of human beings; **Tripalyopamāntarmuhūrte -** three Palyopamas & one Antarmuhūrta.

सूत्रार्थ : मनुष्यों की उत्कृष्ट स्थिति तीन पल्योपम एवं जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है।

English Rendering : The maximum age of human beings is three Palyopamas and minimum is one Antarmuhūrta.

टीका : प्रमाण दो प्रकार का होता है – एक संख्या रूप और दूसरा उपमा रूप। जिसका आधार एक, दो, तीन आदि संख्यायें होती हैं, उसे 'संख्या प्रमाण' कहते हैं। जो संख्या के द्वारा न गिना जा सके और जिसे किसी उपमा के द्वारा आँका जाए, उसे

'उपमा प्रमाण' कहते हैं। इसी का एक भेद पल्योपम है। पल्य गड्ढे को कहते हैं। उसके तीन भेद हैं – व्यवहार पल्य, उद्धार पल्य और अद्धा पल्य।

यदि तीन एक योजन लम्बे, एक योजन चौड़े और एक योजन गहरे गड्ढे खोदे जावें एवं उनमें से पहले गड्ढे में एक दिन से लेकर सात दिन तक के जन्मे मेढ़े के रोमों के अग्र भागों को कैंची से इतने बारीक टुकड़े किये जायें कि और आगे टुकड़े किया जाना सम्भव न हो। इस प्रकार के बालों से उस गड्ढे को मुँह तक भर दिया जाए, उसे 'व्यवहार पल्य' कहते हैं। इस व्यवहार पल्य के रोमों में से सौ-सौ वर्ष के बाद एक-एक रोम निकालने पर जितने काल में वह गड्ढा रोमों से खाली हो, उतने काल को 'व्यवहार पल्योपम' काल कहते हैं। व्यवहार पल्य के रोमों में से प्रत्येक रोम के बुद्धि के द्वारा इतने टुकड़े किये जायें जितने असंख्यात करोड़ वर्षों के समय होते हैं और फिर उन रोमों में से दूसरे गड्ढे को भर दिया जाए, उसे 'उद्धार पल्य' कहते हैं। उनमें से प्रति समय एक-एक रोम के निकालने पर जितने काल में वह गड्ढा रोमों से खाली हो जावे, उतने काल को 'उद्धार पल्योपम' काल कहते हैं। उद्धार पल्य के रोमों से प्रत्येक रोम के कल्पना के द्वारा पुनः इतने टुकड़े किये जायें जितने सौ वर्ष के समय होते हैं, और उन रोमों से पुनः उक्त विस्तार वाले तीसरे गड्ढे को भर दिया जावे, उसे 'अद्धा पल्य' कहते हैं। उस अद्धा पल्य के रोमों में से प्रति समय एक-एक रोम निकालने पर जितने काल में वह गड्ढा खाली हो, उस काल को 'अद्धा पल्योपम' कहते हैं।

इन तीन पल्यों में से पहला व्यवहार पल्य दूसरे दो पल्यों के निर्माण का मूल है, उसी के आधार पर उद्धार पल्य और अद्धा पल्य बनते हैं। इसी से उसे 'व्यवहार पल्य' नाम दिया गया है। इसके द्वारा किसी वस्तु का परिमाण नहीं किया जाता। उद्धार पल्य के रोमों के द्वारा द्वीपों और समुद्रों की संख्या जानी जाती है और अद्धा पल्य के द्वारा नारकियों, तिर्यञ्चों, मनुष्यों और देवों की आयु, भव, काय एवं कर्मों की स्थिति आदि जानी जाती है। इसी से इसे अद्धा पल्य कहते हैं। 'अद्धा' का अर्थ काल है। दस कोड़ाकोड़ी अद्धा पल्य का एक अद्धा सागर होता है और दस अद्धा सागरों का एक उत्सर्पिणी या अवसर्पिणी काल होता है।

Comments : Measurement of time is done in two ways - by numbers and by comparision. That which is denoted by numerals like one, two, three etc. are known as numerical measurement. That which can not be counted by numbers and is recognized by means of comparision is known as comparision measurements. Palyopama is one of its kinds.

'Palya' means a pit. It is of three kinds - 'Vyavahāra Palya', 'Uddhāra Palya' and 'Addhā Palya'.

If a pit measuring one Yojana in length, one Yojana in width and one Yojana in depth is dug and if this pit is packed up to its top with the smallest bits of body-hair of rams of one to seven days old; the bits incapable of being further cut by scissors; that is known as 'Vyavahāra Palya'. Out of this Vyavahāra Palya, then the smallest bits of body-hair are taken out one by one in every one hundred years, the time taken for emptying the pit in this manner is called 'Vyavahāra Palyopama'. Out of these bits, each bit is again cut by imagination, into so many pieces as there are instants (Samayas) in innumerable crores of years and with such bits the pit is filled up. This is called 'Uddhāra Palya'. Then these bits are taken out one by one by every instant (Samaya). The time taken for emptying the pit in this manner is called 'Uddhāra Palyopama'. Each bit of the 'Uddhāra Palya' is further imagined to be cut again into so many pieces as are 'Samayas' in one hundred years and then the pit is having the similar dimensions is filled by these bits, that is known as 'Addhā Palya'. The time taken for emptying this 'Addhā Palya' by taking out each bit in one Samaya is known as 'Addhā Palyopama'.

Out of these three types of Palyas, the first Vyavahāra Palya is the basic unit for designing of the other two Palyas as the other two Palyas - Uddhāra Palya & Addhā Palya are formed on that basis and therefore it is termed as 'Vyavahāra Palya'. Nothing is measured by it. The bits of Uddhāra Palya are used for measurement of extents of continents and oceans and Addhā Palya is used for determination of duration of age, life-course, body & karmas of infernal beings, Tiryañcas, human beings and celestial beings. 'Addhā' means period or Kāla. Ten Koḍākoḍī Addhā Palya makes one 'Addhā Sāgara' and ten Addhā Sāgaras make one ascending or descending cycle.

तिर्यञ्चों की स्थिति
Age of Tiryañcas

तिर्यग्योनिजानां च।।३९।।

(तिर्यक्-योनिजानां च।)

Tiryagyonijānāṁ Ca. (39)

शब्दार्थ : **तिर्यग्योनिजानां च –** तिर्यञ्चों की स्थिति वैसी ही है।

Meaning of Words : **Tiryagyonijānāṁ Ca -** the life span of Tiryañcas is similar to the earlier one i.e. as was for human beings.

सूत्रार्थ : तिर्यञ्चों की स्थिति उतनी ही है जितनी (पूर्व सूत्र में) मनुष्यों की बताई गई है।

English Rendering : The life-span of Tiryañcas is the same as that of the human beings stated (in the previous Sūtra).

टीका : तिर्यञ्चों की उत्कृष्ट स्थिति मनुष्यों के समान ही तीन पल्योपम और जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त है। मध्यम स्थिति के अनेक विकल्प हैं। तिर्यञ्च तीन प्रकार के होते हैं – एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय। एकेन्द्रियों में शुद्ध पृथिवीकायिक जीवों की उत्कृष्ट आयु बारह हजार वर्ष होती है। खर पृथिवीकायिक की आयु बाईस हजार वर्ष होती है; जलकायिक जीवों की आयु सात हजार वर्ष, वायुकायिक जीवों की तीन हजार वर्ष। वनस्पतिकायिक जीवों की दस हजार वर्ष होती है और अग्निकायिक जीवों की आयु तीन रात्रि-दिन होती है। विकलेन्द्रियों में दो इन्द्रिय जीवों की उत्कृष्ट आयु बारह वर्ष, तीन इन्द्रियों की उनचास रात्रि-दिन और चार इन्द्रियों की छह मास होती है। पञ्चेन्द्रिय जलचर जीवों में मत्स्य आदि की उत्कृष्ट आयु एक पूर्व-कोटि, गोधा एवं नकुल आदि परिसर्पो की नौ पूर्वाङ्ग, सर्पो की बयालीस हजार वर्ष, पक्षियों की बहत्तर हजार वर्ष और चार पैरों वालों की तीन पल्योपम होती है। इन सभी की जघन्य आयु एक अन्तर्मुहूर्त होती है।

Comments : The maximum life-time of Tiryañcas is same i.e. three Palyopama and minimum one Antarmuhūrta as is the case in respect of human beings. There are several grades in between. Tiryañcas are of three kinds - one sensed, two, three & four sensed ones (known as Vikalendriya) and five sensed ones. Amongst one sensed beings, the pure earth bodied souls have maximum life-span of

twelve thousand years. Khara Pṛthivīkāyika (earth bodied souls of Khara earth) have twenty-two thousand years; water bodied souls seven thousand years, air bodied souls three thousand years and vegetable plant based souls have ten thousand years. Fire-bodied souls have life-span of only three days-nights. Amongst Vikalendriyas, two sensed souls have maximum life-span of twelve years, three sensed souls forty nine days & nights and four sensed beings six months. Amongst five sensed water based beings i.e. fish etc. have maximum life-span of one Pūrva-Koṭi; Iguna (Godhā), Nakula etc. nine Pūrvaṅga, snakes forty two thousand years, birds seventy two thousand years and animals having four feet three Palyopamas. The minimum life-span of all these beings is one Antarmuhūrta.

इति तत्त्वार्थसूत्रे तृतीयोऽध्यायः।

End of Third Chapter of Tattvārthasūtra.